सादर जय-जिनेन्द्र ! बंधुओं,

अत्यंत प्रसन्नता है कि हम सभी भगवान महावीर का २५५० वाँ निर्वाण महामहोत्सव मना रहे हैं। भगवान महावीर के निर्वाण से ही श्रवण संस्कृति का नववर्ष प्रारम्भ होता है अतः समस्त देशवासियों को २५५० वें नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !

गत दिनों श्री गिरनार जी क्षेत्र से सम्बंधित अनेकों गतिविधियाँ हुई, श्री गिरनार जी क्षेत्र पर जैन समुदाय और अन्य धर्मावलम्बियों के बीच एक बहुत बड़ा विवाद बना हुआ है। २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ एवं अनेकों अरिहंत भगवंतों की निर्वाण स्थली श्री गिरनार पर्वत पर हम सभी की अटूट आस्था और श्रद्धा है। बीतें दिनों श्री गिरनार जी क्षेत्र के दत्तात्रय के महंत द्वारा कुछ विडिओ और समाचार वायरल हुए जिनमें हमारे मुनि भगवंतों पर अभद्र टिप्पणी करते हुए समाज को धमकी देने का कुप्रयत्न किया, तत्पश्चात वह वीडियो देश भर में प्रसारित हुआ जिससे सम्पूर्ण जैन समाज में आक्रोश व्याप्त हो गया।

हमारे मुनि महराजों ने समाज को संबोधित करते हुए संयम पूर्वक गिरनार जी के संरक्षण के लिए समाज को प्रोत्साहित किया। इसी दरम्यान हमने तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज जोकि आगरा में ससंघ विराजमान हैं उनके समक्ष जाकर श्री गिरनार जी की विस्तृत जानकारी देते हुए मुनि श्री से मार्गनिर्देशन प्राप्त किया।

मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ही सभी तीर्थो का संरक्षण करने वाली सवा सौ साल प्राचीन सकल जैन समाज की सर्वोपरि संस्था है तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी के नेतृत्व में ही समाज को कोई भी कदम उठाने चाहिए। मुनि श्री ने आगे कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण के लिए निति निर्धारित करे तथा समाज को तीर्थक्षेत्र कमेटी को पूरा सहयोग करना चाहिए।

मुनि श्री ने आपसी सामंजस को सर्वप्रथम रखते हुए शांति का मार्ग खोजने का आशीर्वाद प्रदान किया, तथा मुनि श्री ने जानकारी देते हुए कहा कि भारत के गृहमंत्री और प्रधानमंत्री के पास श्री गिरनार जी प्रकरण का समाचार पहुँच गया है गत दिनों परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शनाथ पधारे भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सर्वप्रथम नमोस्तु पूर्वक कहा कि श्री गिरनार जी से सम्बंधित हमें पूरी जानकारी है और हम उसके निराकरण का भरसक प्रयास कर रहे हैं जिससे आपसी सामंजस और सौहाद्र बना रहे।

हमारे साथ इस शिष्य मंडल में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रदीप जी जैन (पीएनसी), श्री नीलम अजमेरा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी एवं गुजरात अंचल के अध्यक्ष श्री पारस जैन (बज) उपस्थित रहे और सभी ने मुनि श्री से आशीर्वाद ग्रहण किया।

आप सभी को विदित करा दें कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी सभी तीर्थो के संरक्षण व उनके संवर्धन के लिए हमेशा कटिबद्ध है, हमारे सभी पदाधिकारी सजग रूप से तीर्थो पर होने वाली प्रत्येक घटना पर अपनी पैनी नजर बनाये हुए हैं, तथा तीर्थो पर होने वाली अमर्यादित घटनाओं पर हमने समय समय पर कार्यवाहियां भी की हैं। हम समाज को यह विश्वास दिलाते हैं कि श्री गिरनारजी, श्री सम्मेदशिखर जी एवं हमारे सभी पवित्र तीर्थो का संरक्षण सदा होता रहेगा आवश्यकता पढ़ने पर हमारे द्वारा ठोस कदम उठाये जाते रहे हैं और हमेशा उठाये जाते रहेगें।

भगवान महावीर से प्रार्थना है कि आने वाला वर्ष हम सभी के जीवन में एक नई उमंग लेकर आये और हम सभी को जैन धर्म व अपने तीर्थो की सुरक्षा के लिए सदा प्रेरणा और मंगलदायी हो, पुनश्च आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं !

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री गिरनार जी पर्वत की वस्तुस्थिति

सादर जय जिनेन्द्र !

यह सर्वविदित है कि 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का निर्वाण ऊर्जयंत श्री गिरनार पर्वत के उच्च शिखर पांचवी टोंक से हुआ है। भगवान नेमिनाथ ने अपनी दीक्षा कल्याणक, ताप कल्याणक वे केवलज्ञान प्राप्त कर निर्वाण गिरनार पर्वत से ही प्राप्त किया जिस पर्वत पर हमारी श्रृद्धा हजारों साल से बनी हुई है और इस सिद्धक्षेत्र पर स्थित भगवान नेमिनाथ के चरणचिन्ह और वहां पर विराजमान प्राचीन मूर्तियों की हम सभी सदियों से पूजा वंदना करते आ रहे हैं। इस क्षेत्र का वर्णन आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने विशेष रूप से किया है जिसका उल्लेख द्वितीय शताब्दी में लिखी हुई पुस्तक "प्राकृत निर्वाण" काण्ड में मिलता है जिससे यह पुष्टि होती है कि नेमिनाथ भगवान गिरनार से निर्वाण पद को प्राप्त हुए हैं। इसी तरह आचार्य जिनसेन ने आठवीं शताब्दी में "हरिवंश पुराण" की रचना की जिसमें इस तथ्य की पूर्णरूपेण पुष्टि की है।

सन 1157 में गिरनार पर्वत के नीचे से पांचवी टोंक जहाँ तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के चरण चिन्ह हैं वहां पहुंचने के लिए जैनसमाज की ओर से सीढियों का निर्माण कराया गया।

ऐतिहासिक प्रमाण व तथ्यों के अनुसार लन्दन के म्यूजियम के निष्णात श्री जेम्स वर्गीस ने सन 18४5 में सौराष्ट्र के प्राचीन क्स्तेरों की रिपोर्ट में उल्लेख करते हैं कि पांचवी टोंक पर जैन तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के प्राचीन चरण, एक घंटा एवं उकेरी हुई मूर्ति के आलावा और कुछ नहीं है। वहां उन्होंने नग्न (दिगम्बर) व्यक्ति को भी इस स्थान पर देखा है। वे आगे लिखते हैं कि इस टोंक को दत्तात्रय टोंक से भी जाना जाता है और इसका नाम श्री भगवान नेमिनाथ के मुख्य शिष्य दात्तारी थे जिसका अपभ्रंश दत्तात्रेय नाम से हुआ है। आगे उन्होंने भगवान नेमिनाथ का मोक्ष इसी शिखर से हुआ ऐसा भी उल्लेख किया है। गिरनार पर्वत पर अनेक अस्थान पर जैन तीर्थंकरों के चरण एवं मूर्तियाँ विराजमान थी और प्रारम्भ से ही जैन यात्री दर्शन पूजन का लाभ लेते रहे हैं।

सन 1855 में राजस्थान प्रतापगढ़ से तीर्थ भक्त श्री सेठ कस्तूरचंद बंडी अपनी पत्नी व अनुज श्री हीरालाल बंडी के साथ गिरनार जी यात्रा पर पधारे। वहां उन्हें पूजा पाठ करने की इजाजत (दिगम्बर आम्नाय से) नहीं दी गयी जिसके फलस्वरूप उनकी पत्नी ने तुरंत दिगम्बर जैन मंदिर पहाड़ व तलहटी बनवाने की मांग कर उपवास पर बैठ गई। सेठ जी ने तत्कालीन जूनागढ़ नवाब के दरबार से विनती की कि पहाड़ पर व तलहटी पर वे तुरंत दिगम्बर जैन मंदिर बनवाना चाहते हैं और नवाब ने तुरंत पट्टा लिखकर काफी बड़ी जमीन पहाड़ व तलहटी पर देकर दिगम्बर जैन मंदिर बनाने का मार्ग प्रशस्त किया जिसके फलस्वरूप प्रथम टोंक पर जिन मंदिर का निर्माण व तलहटी में भव्य मंदिर व धर्मशाला का निर्माण उनके पूर्वज श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना (पेढ़ी) की स्थापना की गई। इसी श्रृंखला में शहर जूनागढ़ में बाद में जिन मंदिर व धर्मशाला का निर्माण कराया गया। पेढ़ी का संचालन जूनागढ़ शहर से होता था। बाद में परवत पर धर्मशाला व तलहटी में भव्य मानस्तंभ का निर्माण श्री बंडीलाल जी दिगम्बर जैन कारखाना ने कराया। तत्पश्चात समाज के सहयोग से तलहटी धर्मशाला का नवीनीकरण कर वाहन वीआइपी कमरे के अलावा अति आधुनिक भोजनशाला व प्रवचन हाल आदि का निर्माण कराया गया। इस कड़ी में नवनिर्माण में आधुनिक विश्राम गृह जो भव्य रूप से निर्मित हो रहा है यह ट्रस्ट भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई से सम्बद्ध है।

सन 1853 में गिरनार पर्वत की प्रायः सभी टोंकों की देखरेख व सेवा संभाल रहा यह ट्रस्ट (जो गुजरात पब्लिक ट्रस्ट के अंतर्गत पंजीकृत है) द्वारा समय समय पर जीर्णोद्धार, सफाई, टाइल्स, पत्थर आदि लगाने का काम भी इसी ट्रस्ट द्वारा किया गया है।

यह सर्वविदित है कि जैन किसी दुसरे सम्प्रदाय के चरण पर जैननुमा छत्री नहीं बनाते हैं। श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना द्वारा निर्मित भगवान नेमिनाथ के चरण चिन्ह पर जैननुमा छत्री इसका प्रमाण है कि यह जैनियों का सबसे पवित्र सिद्धक्षेत्र में से एक है। पहली बार छत्री सन 18७9 संवत 1935 में बनवाई, जिसमें किसी की अनुमति की जरुरत नहीं पड़ी। सन 1902 में जूनागढ़ के नवाब की अनुमति से फिर नई छत्री बनाई गयी। इस अनुमति की सत्य प्रतिलिपि कलेक्टर जूनागढ़ से आर.टी. आई के मार्फ़त सन 2011 में ट्रस्ट ने प्राप्त की, जिसमें साफ़ लिखा कि आप छत्री बना सकते हैं परन्तु उसका स्वामित्व नहीं दिया जा सकता है। पुनः छत्री टूटने से सन 1914 में जूनागढ़ नवबा की इजाजत से जैननुमा छत्री बनवाई गई जो यह दर्शाता है कि जैनियों का अस्तित्व अनादिकाल से वहां है। किसी अन्य समुदाय ने इसका विरोध नहीं किया।

संस्था के पास इसके सभी फोटो उपलब्ध हैं। सन्१६५० व

१६५२ में ट्रस्ट को जीर्णोद्धार की अनुमति इसी शर्त पर मिली कि हम वहाँ मालिकाना हक नहीं स्थापित कर सकते और इस अनुमति की कॉपी हिन्दू समाज व श्वेताम्बर जैन समाज को भी दी गई, जिसका उन्होंने विरोध नहीं किया। इस तरह अन्य टोकों पर भी जीर्णोद्धार का काम हुआ श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना के द्वारा निर्मित तीनों मंदिरों के मूलनायक श्री १००८ भगवान नेमिनाथ ही हैं।पहली टोंक पर चौबीसों भगवान के चरण चिह्न हैं। प्रथम टोंक पर मूलनायक श्री नेमिनाथ स्वामी, नेमिनाथ के चरण एवं चौबीस तीर्थंकर के चरण विद्यमान हैं। दूसरी टोंक पर अनिरुद्ध कुमार के चरण स्थापित हैं तथा तीसरी टोंक पर मुनि शंभूकुमार के दर्शन होते हैं। चौथी टोंक पर श्री प्रद्युयन कुमार जी के चरण विराजमान हैं। पांचवीं टोंक जो भ. नेमिनाथ की निर्वाण स्थली है वहां श्री नेमिनाथ जी के अति प्राचीन चरण और शिला में भ. नेमिनाथ की पद्मासन मूर्ति विराजमान है।

सन्१९३२ या १९३९ में जूनागढ़ स्टेट ने संरक्षित व प्राचीन स्मारकों की सूची जारी कर पुरातत्व संरक्षक नियम १९३२ के अंतर्गत पाँचवीं टोंक को गुरु दत्तात्रय नाम से रजिस्टर किया। सन्१९५० फिर हमारे ट्रस्ट ने पाँचवीं टोंक पर पहुँचने हेतु नवीन सीढ़ियों का नवीनीकरण किया।

सन् १९६१ में श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना, जूनागढ़ ने अपनी संस्था को बॉम्बे चेरिटेबल पब्लिक ट्रस्ट के अंतर्गत रजिस्टर्ड कराने की मांग की। अपनी एप्लीकेशन में सभी टोकों की सूची बताते हुए पाँचवीं टोंक पर भ. नेमिनाथ के चरण चिह्न व पहाड़ में उकरी हुई मूर्ति का उल्लेख किया और वहाँ पहुंचकर दर्शनार्थ के अधिकार हैं उस बात का उल्लेख किया। यह बात अत्यन्त आश्चर्यजनक है कि हमारी अप्लीकेशन के बाद वाले आधे भाग को चेरिटी कमिश्नर के यहाँ फाड़ दिया गया है जो किसी सोची-समझी रणनीति का प्रमाण है परन्तु हमारे एप्लीकेशन की सत्य कॉपी हमारे पास है जिसका संज्ञान चेरिटी कमिश्नर नहीं ले रहा है।

बाद में नाथ संप्रदाय के महंतों व साधुओं ने भी गिरनार पर स्थित दत्तात्रय का रजिस्ट्रेशन मांगा और पांचवीं टोंक पर अपनी मालिकाना हक होने का उल्लेख भी किया, जिसका विरोध हमारे ट्रस्ट ने पूरी ताकत के साथ किया। परिणामस्वरूप आज पाँचवीं टोंक यानी नेमिनाथ टोंक या दत्तात्रय टोंक गुजरात राज्य का पुरातत्व संरक्षित स्मारक है जिसकी मालकियत सिर्फ गुजरात सरकार की है।

सन्1965 के पुरातत्व अधिनियम के अनुसार तीसरी व पाँचवीं टोंक को पुरातत्वीय महत्वपूर्ण स्थान घोषित किया गया, जहाँ कोई भी निर्माण व मूल स्वरूप के ढाँचे के परिवर्तन पर पूर्ण रोक लगा दी, जिसके फलस्वरूप रिपेरिंग आदि केवल गुजरात पुरातत्व ही कर सकता है।

सन्१९७१ में श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना के सभापति श्री मिल्टनलालजी बंडी व उपसभापति श्री झमकलालजी बंडी वे श्री साहू शांतिप्रसाद जैन की सहायता से गुजरात सरकार (कलेक्टर) के हस्तक एक समाधान समझौता हिन्दू महंतों के साथ किया गया, जिस पर जैनियों के प्रतिनिधि के रूप में श्री मिल्टनलाल जी एवं श्री झमकलालजी बंडी के हस्ताक्षर हैं और हिन्दुओं की तरफ से तीन महंतों के हस्ताक्षर हैं जिसमें प्रमुख महंत सेठ श्री रणछोड़दास के हस्ताक्षर सम्मिलित हैं। इस समझौते द्वारा जैन यात्रियों के दर्शन व पूजन के अधिकार व चरण पर आधे फूलों को हटाने की मांग को दोनों पक्षों ने स्वीकारा था। इस समझौते के गुजरात के प्रमुख अखबारों में मुख्य चाह रूप में छपे और इसकी प्रतिलिपियाँ उपलब्ध हैं परन्तु बाद में महंतों व साधुआ ने इस समझौते को मानने से साफ इनकार कर दिया और दलील दी कि वह हिन्दू महंतों के हस्ताक्षर को मान्य नहीं करे व तत्कालीन महंतों की पहिचान से अपनी अनभिज्ञता बताते हैं।

आंधी व तूफान के चलते सन्१९८० में पाँचवीं टोंक पर छत्री पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई, तब श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना पब्लिक ट्रस्ट जूनागढ़ ने चौथी बार निर्माण की अनुमति मांगी। इस समय महंतों ने भी रिपेरिंग की अनुमति मांगी जिसे पुरातत्व विभाग ने अस्वीकार करते हुए कहा कि छत्री का निर्माण गुजरात सरकार करेगी। हमारे याद दिलाने पर भी इसका निर्माण सरकार ने नहीं किया और यथास्थिति में २००४ तक पड़ी रही। पूर्व में सभी छतरियाँ हमारे ट्रस्ट ने बनवायी, यह जैन समाज के अस्तित्व के दावे को पूर्णता प्रदान करता है। यह सब मालूम होते हुए भी पाँचवीं टोंक पर कुछ असामाजिक तत्वों तथा बाबाओं व महंत पिछले पचास वर्ष से वहाँ दिन भर बैठकर पुरातत्व अधिनियम की अवहेलना करते हैं। ये लोग निर्वाण क्षेत्र के दर्शन हेतु पहुँचने वाले जैन यात्रियों को डराते व धमकाते हैं और नीचे फेंक देने की धमकी भी देते हैं। यहाँ तक कि कभी -कभी मारपीट भी करते हैं जिसके शिकायत करने पर शासन कोई कार्यवाही नहीं करता है।

अप्रैल, २००४ में अचानक श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना से खबर आई कि बांधकाम के निर्माण की सामग्री पाँचवीं टोंक पर बिना किसी रोक-टोक के पहुँच रही है। सौराष्ट्र विकास मंडल की जूनागढ़ की गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए इस बात की भनक लग गई कि वहाँ कोई बांधकाम बिना इजाजत से हो रहा है। तुरंत संस्था के पदाधिकारी श्री निर्मल कुमार बंडी जो दिल्ली प्रवास पर थे,

१५ अप्रैल, २००४ को निर्देशक, पुरातत्व विभाग, गांधीनगर जिसकी कॉपी सचिव सांस्कृतिक विभाग गुजरात सरकार को लिखी और शंका जाहिर की कि वहां गैर कानूनी अवैध निर्माण हेतु बांधकाम की सामग्री पहुँच रही है। यह पत्र अपने द्वारा याचिका में एन्केस्चर के रूप में दाखिल किया गया। शंका पूर्ण रूप से सही साबित हुई वहां छत्री के बजे चरण के घेराव में मंदिर नुमा ढांचे का निर्माण शुरू हो चूका था जो न सिर्फ अवैध था अपितु 1965 के पुरातत्व अधिनियम की पूर्ण रूप से उलंघन भी था। इस पुख्ता के बाद भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई व श्री बंडीलालजी कारखाना ने १५ मई को पुरातत्व विभाग व कलेक्टर के माध्यम से स्टेप्राप्त किया। सटे के बावजूद बाबा व महंत लोगों ने रात्रिकाल में निर्माण जारी रखा। कलेक्टर ने हमारी व महंतों की संयुक्त बैठक कर निर्माण कार्य रोकने हेतु लिखित ऑर्डर दिये। परन्तु शासन की बेपरवाही से निर्माण कार्य चालू रहा १८ मई, २००४ को श्री बंडीलालजी कारखाना ने कलेक्टर साहब को पुनः शिकायत दर्ज करायी। कलेक्टर ने २५ मई को दस्तखत कर कार्यान्वित करने के बाद भी गैरकानूनी निर्माण कार्य चलता रहा।

स्थिति की गंभीरता को भाँपते हुए भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना, जूनागढ़ के पदाधिकारी अहमदाबाद में जून के प्रथम सप्ताह में इकट्ठे हुए जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी के वकील श्री डी. के. जैन ने बहुत ही सकारात्मक भूमिका निभायी। इसके पूर्व २ जून, २००४ को तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष श्री वसंतभाई दोशी ने तत्कालीन सांस्कृतिक मंत्री श्रीमती आनंदीवेन पटेल से मुलाकात के लिये समय मांगा, लेकिन मुलाकात का समय नहीं दिया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना ने गंभीर सलाह मशविरा कर यह निर्णय लिया कि अहमदाबाद के प्रसिद्ध वकील श्री नानावटी से काउंसलिंग करें और इस हेतु श्री वसंतभाई दोशी, श्री डी.के.जैन व श्री सुरेन्द्र कुमार पाडलिया, वकील जो बंडी कारखाने के मंत्री भी रहे को अधिकृत किया सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि कल ७ जून २००४ को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई व श्री बंडीलालजी कारखाना जूनागढ़ की संयुक्त रूप से रिट-पिटीशन माननीय गुजरात हाई कोर्ट में दायर करे, जिसकी पैरवी सीनियर वकील श्री नानावटी करेंगे। दिनांक ७-६-२००४ को रिट-पिटीशन नं. ६४२८/२००४ को हाई कोर्ट में दाखिल की गई। ८ जून को माननीय जस्टिस कुरेशी ने इस पैरवी की सुनवाई करते हुए अपने अहम फैसले में स्टे - ऑर्डर कर त्वरित निर्माण पर रोक लगा दी परन्तु स्टे- ऑर्डर में एक शर्त रख दी कि अगर सरकार अनुमति दे तो उस अनुसार निर्माण हो सकता है। इस स्टे आदेश को डायरेक्ट सर्विस की अनुमति दी गई और आठ जून को ही अविलम्ब श्री निर्मल कुमार बंडी व श्री ज्ञानमल जी शाह ने इसे निर्देशक श्री वाई. एस. रावत, पुरातत्व विभाग व सचिव, सांस्कृतिक विभाग, गुजरात गरकार को हस्तांतरित कर आवक की रमीद ले ली। साथ ही ट्रस्ट के कर्मचारी को जूनागढ़ खाता कर कलेक्टर को नोटिस सर्व कर दिया जो ६ जून को हुआ। वह बहुत आश्चर्य व चौंकाबी वाली बात है कि गुजरात सरकार के सासंकृतिक विभाग ने पुर्व तारीख २ जून, २००४ में आदेश जारी कर निर्माण की कानूनी जामा पहना दिया जिसकी सूचना जुनागढ़ कलेक्टर को १२ जून, २००४ या १६ जून, २००४ को मिली व कलेक्टर ने हमें १७ जून का इसकी सूचना दी।

यह पूछने पर कि २ जून को अधिसूचना व आदेश जारी हुआ था तो इसकी पूर्व सूचना किसी भी अधिकारी को नहीं थी। तब जब हमने स्टे का नोटिस ८ जून को सर्व किया, तब भी किसी अधिकारी ने २ जून के आदेश की हमें सूचना नहीं दी जिससे सोची समझी साजिश की बू आती है। शासन एवं हाई कोर्ट के आदेशों का सम्पुर्ण अनादर करते हुए कुछ तत्वों ने अचानक ही पांचवी टोंक पर रातों – रात करीब 4 फीट उंचाई की गुरुदत्तात्रय की नई मूर्ति स्थापित कर दी। तुरंत ही हमारी ओर से एवं पुरातत्व विभाग ने इसके विरुद्ध ऍफ़.आई.आर. दर्ज की।

हमारे कोर्ट में वकीलों के माध्यम से अथक प्रयास करने के बाद माननीय जस्टिस श्री एम.आर.शाह के निर्देश पर १६-१२-२००४ को हाई कोर्ट के आदेशानुसार पाँचवीं टोंक पर इन्सपेक्शन टीम निरीक्षण कर अपनी सत्य रिपोर्ट पेश करे और इसे हाईकोर्ट में फाइल करे, जिससे सही दिशा निर्धारित हो सके। बाद में कलेक्टरश्री ने अपनी रिपोर्ट पेश की जिसमें गैरकानूनी तरीके से नई मूर्ति बिठाने का उल्लेख भी शामिल है।

१७-२-२००५ को माननीय जस्टिस श्री जयंत पटेल ने अपने अहम अंतरिम ऑर्डर पास कर स्टेट्स क्वा को प्रभावित कर सभी तीर्थयात्रियों को सबल सुरक्षा प्रदान कर पाँचवें टोंक पर बिना किसी विघ्न के अपनी आम्नाय व मानता से सुविधा पूर्वक दर्शन करने का अधिकार है, ऐसा आदेश दिया। इस हेतु सरकार को निर्देश देकर एक पुलिस चौकी पहाड़ पर स्थापित की जावे, जहाँ अविलम्ब ७ से ९ पुलिसकर्मी को तैनात करे जो सभी यात्रियों को बिना किसी अवरोध व व्यवधान के दर्शन करने दे व कोई भी अप्रिय घटना घटे तो उसकी

सूचना व रिपोर्ट पुलिस चौकी में दर्ज करायें। परन्तु इसके विपरीत समय-समय पर कई अप्रिय घटना घटी और पुलिस ने अपना फर्ज नहीं निभाया और अनेक आपत्तिजनक घटनायें घटी, जिसकी शिकायतें उच्च अधिकारियों के यहाँ कर कोर्ट में पेश की गई है। अभी पुलिस चौकी भी उठा ली गई है।

पांचवीं टोंक की तलहटी में कोई संस्था ने नया गेट गैरकानूनी तरीके से बनवा दिया। हमारी ओर से हाई कोर्ट में नया केस दायर करके गेट तुड़वाने की मांग की गई। हाई कोर्ट ने कलेक्टरश्री को योग्य करने हेतु आदेश दिया। बाद में यह ड्यूटी कन्जर्वेटर आफ फारेस्ट को दी गई हमारे अनेक स्मरण पत्र के बावजूद नया दत्तात्रय-कमलकुंड गेट तोड़ा नहीं गया। हम दुबारा कानूनी कार्रवाई कर रहे हैं।

गुजरात हाई कोर्ट के स्टे -ऑर्डर के बावजूद भी वहाँ नये-नये निर्माण कार्य करा दिये जाते हैं। गुजरात सरकार का जो सहयोग हमें मिलना चाहिए वह नहीं प्राप्त होने से हमें अपने अधिकार स्थापित करने में भारी कठिनाई हो रही है।

अभी-अभी दिनांक १ जनवरी, २०१३ को असामाजिक तत्वों द्वारा पवित्र गिरनार जी पर्वत पर हत्या करने का कुत्सित प्रयास किया गया। यह प्रयास महंत श्री मुक्तानंदगिरि के द्वारा हुआ, जिन्होंने परमपूज्य प्रबल सागर जी महाराज पर चाकुओं से कई बार हमला कर उनकी हत्या करने का प्रयास किया। घटना की जानकारी मिलते ही तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना की ओर से स्थिति की गंभीरता को देखते हुए गुजरात सरकार एवं केद्र सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों से संपर्क किया गया और तीर्थक्षेत्र कमेटी का एक प्रतिनिधिमंडल गुजरात अंचल के पदाधिकारियों के साथ जूनागढ़ पहुंचा तथा मुनि श्री प्रबलसागरजी के स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की। साथ-साथ हमारा प्रतिनिधिमण्डल कुछ प्रमुख महंतों से मिला और समस्या के समाधान हेतु कोई मार्ग प्राप्त करने हेतु वार्तालाप प्रारम्भ हुआ। प्रतिनिधिमंडल ने मुनिश्री पर किये गये हिंसक हमले के दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की मांग भी की।

जूनागढ़ जिला प्रशासन ने तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनुरोध पत्र का पूरी तरह से संज्ञान लेते हुए सकारात्मक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। खूनी हमला करने वाले महंत के विरुद्ध क्रिमिनल केस दायर हुआ और उसे तुरंत जेल में भेजा गया। चार माह के वाद महंत को जमानत पर छोड़ा गया है। केस की कार्यवाही चालू है। मुनि श्री प्रबल सागरजी को स्वास्थ्य लाभ हुआ है। वे अभी तारंगाजी क्षेत्र पर चातुर्मास में हैं। साधु-संतों पर इस प्रकार के हमले को लेकर वरिष्ठ हिदू संतों के साथ विचार-विमर्श भी किया गया और सभी ने इस घटना की घोर निंदा कर दुःख प्रकट किया। इस घटना की सारे देश में निंदा हुआ और व्यापक जन प्रदर्शन शांति पूर्ण ढंग से आयोजित किये गये। जैन समाज के वरिष्ठ जनों का एक प्रतिनिधिमंडल गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मिला। मुख्यमंत्री जी ने अपने एक वरिष्ठ केबिनेट मंत्री को इस विषय में बातचीत करने के लिए अधिकृत किया। प्रभारी मंत्री के प्रयत्नों से उनके नेतृत्व में महंतश्री एवं जैन प्रतिनिधि मंडल के बीच दो बैठकें संपन्न हुई, जिसमें आपसी बातचीत के दौरा गिरनारजी की पांचवी टोंक की समस्या का स्थायी हल ढूंढने का निर्णय लिया गया एवं विचार - विमर्श पूर्वक इन प्रश्नों की चर्चा हुई। समाधान की जो बातचीत हुई उसकी रिपोर्ट जैन समाज के विशिष्ट महानुभावों के सामने पेश किया गया और उनसे आगे के वार्तालाप के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया गया।

वर्तमान में श्री गिरनार जी से सम्बंधित अनेकों बातों को प्रचारित किया जा रहा है जिनमें कुछ समाचार जानकारी के आभाव पूर्ण हैं जिससे समाज में दिशा हीनता का प्रभाव पड़ रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी श्री गिरनार जी तीर्थ एवं सभी तीर्थों की सुरक्षा के लिए सदा कटिबद्ध है।

हम अपने प्राचीन सभी तीर्थों की सुरक्षा के लिए सदा समर्पित भाव से प्रयत्न शील हैं जिसमें सकल जैन समाज से सहयोग की विनम्र अपील हैं, हमें अपने तीर्थों की रक्षा के लिए एकमेव होकर कार्य करने की आवश्यकता है।

हर्ष है कि भगवान महावीर का 2550 वाँ निर्वाण दिवस हम सभी बड़े ही हर्षोल्लास से मना रहे हैं, इस शुभ दीपावली के अवसर पर आप सभी को नूतन वर्ष एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनायें!

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

तीर्थ विकास की प्राथमिकताएँ

वर्षाकाल, सोलहकारण एवं दशलक्षण पर्व की सानन्द पूर्णता के पश्चात अब दीपावली का पर्व भी हम सबने उत्साह एवं प्रसन्नता से मनाया। आगमिक व्यवस्था के अनुसार भगवान महावीर के निर्वाण के साथ वर्षायोग पूर्ण हो जाता है तथापि अनेक पूज्य संतगण समाज के आग्रह पर अष्टाह्निका तक वर्षायोग के ग्राम/नगर में ही विराजते हैं। पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम भी प्रायः इन्हीं दिनों सम्पन्न होता है। तदुपरान्त विहार होता है।

इन विशेष दिनों की व्यवस्थायें भी विशेष होती हैं किन्तु सामान्य दिनों में हम एक बार पुनः नियमित व्यवस्थाओं पर चिन्तन कर क्रियान्वयन करते हैं। इन दिनों एक प्रश्न प्रायः उठाया जाता है कि हम इतने मन्दिरों/तीर्थों का निर्माण कर रहे हैं किन्तु हमारा युवा इनमें रुचि नहीं ले रहा फिर इन तीर्थों/विषाल मन्दिरों की क्या व्यवस्था रहेगी? क्या उपयोगिता होगी? युवाओं के तीर्थों पर जाने, उनका जुड़ाव होने पर तीर्थों को तो फायदा होगा ही अनेक सामाजिक फायदे भी होंगे। यथा विजातीय विवाहों का प्रतिषत घटना, साधर्मी मित्रों का बढ़ना, व्यसनों में कमी आदि।

इस सन्दर्भ में मेरा विनम्र सुझाव है कि यदि हम युवाओं की मनः स्थिति, रुचियों एवं आवष्यकताओं को समझे एवं इनमें से जो धर्म के अनुकूल एवं शक्य हो उनको प्राथमिकता एवं तत्परता से पूर्ण करें तो लाभ होगा। मैंने स्वयं 100 से अधिक युवाओं से व्यक्तिगत चर्चा की तो निम्नांकित परिणाम आये।

1. हरीतिमा का विकास करें-वर्तमान युग में हमारी समाज के युवाओं का एक बड़ा वर्ग IT सेक्टर में नौकरी कर रहा है। IT सेक्टर हो या मार्केटिंग दोनों में काम का दबाव बहुत है। अनेक युवा तो टारगेट पूरा करने हेतु 12-12 घंटों की नौकरी कर रहे हैं। वे हरियाली के प्रति आकर्षित होते हैं। कंक्रीट के जंगल में कम्प्यूटरों के आगे बैठे-बैठे वे बोर हो जाते हैं उनकी इच्छा रहती है कि हरे-भरे वृक्षों के बीच जाये जहाँ घास के मैदान हो, क्यारी में रंग-बिरंगे फूल हो, पक्षियों का कलरव हो और हो बहती मन्द बयार। यह सब उनको आकर्षित करता है। एतदर्थ वे रिसोर्ट में जाते है, उद्यान, पार्क आदि जाते हैं। यदि हमारे तीर्थों पर ये सब उपलब्ध हो तो वे तीर्थ पर ही जायेंगे। परिवार के बुजुर्ग भी खुश एवं बच्चे भी खुश। फलतः तीर्थों पर उपलब्ध स्थानों पर हरियाली बढ़ाये।

2. भोजनशाला एवं कैन्टीन-तीर्थ पर पहुँचने के बाद, शुद्ध-शीतल जल, चाय, कुछ नाश्ता एवं पश्चात भोजन की आवश्यकता होती है। प्रायः क्षेत्रों पर R.O. सहित वाटरकूलर लगा देने से पानी की जरूरत तो अंशतः पूरी हो जाती है किन्तु उनकी इच्छा पानी की बोतल, कुछ अन्य सोफ्ट ड्रिंक्स (जूस आदि), बिस्किट एवं चाय/काफी की होती है। एक जैन परिवार को कैन्टीन चलाने की अनुमति एवं सुविधा देने से परिवार तो पलेगा ही क्षेत्र पर यात्रियों की आवक एवं इससे परोक्षतः तीर्थ की आय भी बढ़ेगी। यदि यात्री आयेगा तो गोलक में पैसा बढ़ेगा, चढ़ावा आयेगा एवं इससे ही स्वीकृतियाँ भी मिलेगी। किन्तु कैन्टीन व्यक्ति तभी चलायेगा जब यात्री आयेगा। दोनों पक्षों (प्रबन्धन एवं कैन्टीन संचालक) को थोड़ा-थोड़ा संतोष करना होगा। विशेष अवसरों पर जब ज्यादा यात्री आते हैं तब कैन्टीन संचालक को भोजन एवं जलपान व्यवस्था में वरीयता देने से वह क्षेत्र से लगाव महसूस करेगा एवं क्षेत्र पर कैन्टीन भी सतत चलती रहेगी। क्षेत्र के मैनेजर, मुनीम, पदाधिकारी, अन्य कर्मचारी आगन्तुक तो इसका लाभ लेंगे ही। इससे कैन्टीन धीरे-धीरे चल निकलेगी। यदि यात्री बहुत कम हो तो प्रारम्भिक वर्षों में कैन्टीन संचालक को ही मांग पर भोजनशाला चलाने की भी इजाजत देना चाहिए। यात्रिओं के आगमन पर वह आधे घंटे में शुद्ध सात्विक भोजन उपलब्ध करा देगा। दरें कमेटी तय कर दे। गुणवत्ता सुनिश्चित करें। यात्री बढ़ने पर नियमित सशुल्क भोजनशाला चलाई जा सकती है। क्षेत्र पर भोजनशाला एवं कैन्टीन दोनों जरूरी है। बुजुर्गों को एवं धार्मिक रुचि वालों को भोजनशाला तथा युवाओं/किशोरों/बच्चों हेतु कैन्टीन अत्यावश्यक है। इन सुविधाओं के होने पर यात्री विशेषतः छुट्टी मनाने के मूड वाले युवा क्षेत्र पर आयेंगे तो क्षेत्र की आय बढ़ेगी, प्रचार होगा एवं प्रबन्धन से जुड़े पदाधिकारी भी रूचि लेंगे।

3. सुविधाजनक आवास व्यवस्था-आवास भी एक मूलभूत आवश्यकता है। क्षेत्र पर आते ही पानी पीने के साथ ही व्यक्ति पहले आवास सुनिश्चित करना चाहता है। यदि साथ में परिवार के बुजुर्ग भी हैं तो यह और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाता है एवं व्यक्ति पहले आवास ही लेना चाहता है। 30-40 वर्ष पूर्व तक

व्यक्ति सामान रखने हेतु एक कोठरी चाहता था। वह बरामदे में चटाई/दरी बिछाकर विश्राम करता था किन्तु अब सम्पूर्ण सुविधा सम्पन्न आवास चाहता है यानी बाथरूम सहित कमरा जिसमें बेड आदि लगा हो। कमरे में एअर कंडीश्नर/कूलर/पंखा ग्रेड के अनुसार लगा हो। जाहिर है कि जितनी ज्यादा सुविधायें होगी उतना ही ज्यादा किराया होगा। किन्तु सफाई व्यवस्था श्रेष्ठ होना प्राथमिक आवश्यकता है एअर कंडीश्नर न लगा हो तो चलेगा किन्तु पलंग बिस्तर साफ सुथरे होना जरूरी है। बाथरूम आदि साफ सुथरे होने ही चाहिए। यदि यात्री निवास जैसी कोई व्यवस्था है तो कामन स्थानों पर भी अच्छी सफाई होना चाहिए। यदि हमारी समाज में अच्छा पैसा देने में सक्षम युवा हैं तो मध्यमवर्गीय परिवार भी है जो एक निश्चित बजट में ही यात्रा करने को मजबूर है। उनका भी ख्याल रखना जरूरी है। अतः उन्हें कम लागत में अच्छी आवास सुविधा देना होगी। अतः यदि आप एसी युक्त सूट बनवाये तो यात्री निवास जैसी अच्छी/सस्ती सुविधा भी जुटाये। हर व्यक्ति 1000 या 1500 रु. प्रतिदिन का कमरा नहीं ले सकता। 200-300 रु. प्रतिदिन वाला कमरा जिसमें साफ सुथरे बिस्तर हो एवं पंखा लगा हो, वह भी होना चाहिए। सब कुछ संसाधनों के अनुसार क्रमशः सीमित मात्रा में धीरे-धीरे करें। सिद्धान्ततः निर्णय एक साथ करें।

4. पुरा वस्तुओं में अभिरूचि-आजकल सम्पन्न युवावर्ग में पुरानी चीजों जैसे ज्वैलरी, शोपीस आदि (Antique Article) के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। कुछ तो नयी चीजों को भी पुराना लुक देकर इस्तेमाल करते हैं अतः मेरा सुझाव है कि ऐसे समस्त तीर्थ जिनके परिसर या समीपवर्ती क्षेत्र से कोई भी मूर्ति, मूर्तिखण्ड, भग्नावशेष प्राप्त हो उसे क्षेत्र परिसर में (खुले या बन्द) आकर्षक रूप में प्रदर्शित करें। करीने से प्रदर्शित करने से ही पुरावस्तु का मूल्य समझ में आता है। उसके पैडलस्टैंड के नीचे एक प्लेट लगवाकर विवरण देवे। युवा वर्ग विषेशतः सम्पन्न वर्ग इन Antique चीजों में बहुत रूचि लेते है।

5. क्षेत्र की परिचय पुस्तिका का प्रकाशन-समाज कितना भी शिक्षित या तथाकथित प्रगतिशील क्यों न हो जाये, धर्म के प्रति आस्था अभी भी पर्याप्त है। हर तीर्थयात्री क्षेत्र पर जाकर वहाँ का इतिहास, अतिशय एवं महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ जानना चाहता है। कर्मचारी बदलते रहते हैं उनमें से आधे शाश्वत असंतुष्ट होते हैं जो यात्रिओं को कुछ नहीं बताते। कुछ अज्ञानता से एवं कुछ एक सी बात बार-बार बताकर बोर हो जाने के कारण। अतः क्षेत्र के इतिहास, पुरातत्त्व, अतिषयों, मन्दिरों के परिचय, आवागमन के साधन, समीपवर्ती क्षेत्रों की जानकारी, क्षेत्र की योजनाओं के बारे में लगभग 16-24 पृष्ठों की एक रंगीन सचित्र लघुपुस्तिका जरूर छपवाये एवं आने वाले प्रत्येक यात्री को देवें। इसमें से 1-2% ने भी किसी योजना में योगदान दिया तो खर्च निकल आयेगा। क्षेत्र के अतिशयों, वैशिष्ट्यों, पुरातात्विक महत्व की चीजों का खूब प्रचार करें। जरूरत के अनुसार समीपवर्ती नगर के मन्दिरों पर्यटक स्थलों पर क्षेत्र की जानकारी देने वाले बोर्ड भी लगवाये। मार्गदर्शक पत्थर/बोर्ड संकेतक चिन्ह सहित भी 50 किमी की परिधि के मार्गो पर लगवाये।

हम सब नीचे कुछ चीजों के परस्पर संबंध को दर्शायेंगे।

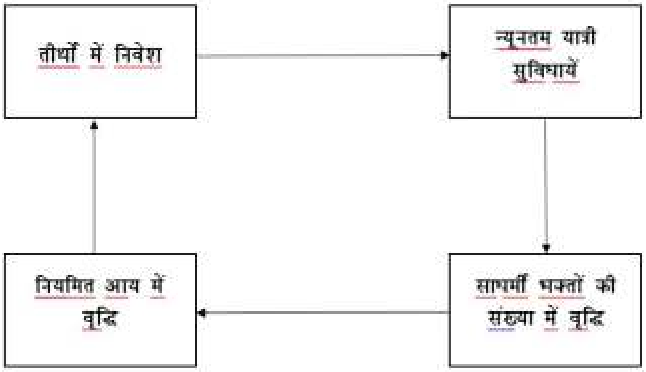

इस प्रकार के लघु प्रयासों से क्षेत्र पर यात्री संख्या बढ़ेगी। क्षेत्र पर आवागमन बढ़ना विकास की पहली जरूरत होती है। यदि हम आगामी शीतकाल के प्रारम्भ से पहले इन पर कार्यवाही प्रारम्भ कर देंगे तो शनैः शनैः सभी लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। इन पर किया गया खर्च निवेश होगा व्यय नहीं। जब यात्री संख्या बढ़ेगी तो आय बढ़ेगी एवं जब आय बढ़ेगी तो सुविधायें बढ़ेगी। यह एक चक्र है जो क्षेत्र विकास का मूलाधार है।

मुझे विश्वास है कि इस निर्विवाद प्रक्रिया का लाभ हमारे क्षेत्रों के पदाधिकारी इन पर ध्यान देकर क्षेत्रों की आय बढ़ायेंगे। इससे न केवल आय बढ़ेंगी अपितु भक्त बढ़ने से सुरक्षा बढ़ेगी, स्थायित्व आयेगा।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाणोत्सव (दीपावली) पर विशेष :

रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रम से निकलें, अंत:करण प्रकाशित करें

-डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भगवान महावीर स्वामी का 2550 वां निर्वाणोत्सव देश-विदेश में श्रद्धा पूर्वक धूमधाम से मनाया जा रहा है।

वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा, शांति, सद्भावना , अपरिग्रह, स्याद्वाद-अनेकांत के दर्शन की तत्कालीन समय में जितनी आवश्यकता थी उससे अधिक आवश्यकता और प्रासंगिकता मौजूदा समय में है। भगवान महावीर जैन धर्म के वर्तमानकालीन 24वें तीर्थंकर हैं। महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण अर्थात् मोक्ष प्राप्त किया था। जैन परंपरा में दीपावली, महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में मनाई जाती है। जहां कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन भगवान महावीर ने मोक्ष को प्राप्त किया था वहीं इसी दिन संध्याकाल में उनके प्रमुख शिष्य, गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुयी थी।

जैनधर्म के लिए यह महापर्व विशेष रूप से त्याग और तपस्या के तौर पर मनाया जाता है। इसलिए इस दिन जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर की विशेष पूजा करके प्रातः बेला में निर्वाण लाडू चढाकर स्वयं उन जैसा बनने की भावना भाते हैं। दिवाली यानि महावीर के निर्वाणोत्सव वाले दिन पूरे देश के जैन मंदिरों में विशेष पूजा, निर्वाण लाडू महोत्सव का आयोजन भव्य रूप में किया जाता है। गोधूलि बेला में अपने-अपने घरों में महावीर भगवान की विशेष पूजन के साथ दीप जलाते हैं।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित संयम आधारित जैन जीवन शैली कोरोना महामारी के समय में लोगों के बचाव में अधिक कारगर साबित हुई। भगवान महावीर के बताये हुए मार्ग पर चलने से हम स्वस्थ, समृद्ध एवं सुखी समाज की संरचना कर सकते हैं। परमाणु खतरों और आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भगवान महावीर के अहिंसा और शांति के दर्शन से ही बचाया जा सकता है।

दीपमालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक : दीपमालिकायें केवलज्ञान की प्रतीक हैं। सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अंधकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालायें जलाने की परंपरा रही है। दीपावली के पूर्व कार्तिक त्रयोदशी के दिन भगवान महावीर ने बाह्य समवसरण लक्ष्मी का त्याग कर मन-वचन-काय का निरोध किया। वीर प्रभु के योगों के निरोध से त्रयोदशी धन्य हो उठी, इसीलिए यह तिथि 'धन्य -तेरस' के नाम से विख्यात हुई, इसे आज अधिकांश लोग 'धन-तेरस' के रूप में जानते हैं।

रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रम से निकलें : आज दीपाली के साथ जैन समाज में अनेक रुढ़ियां प्रवेश कर गयी हैं।हम सभी रूढ़ियों, कुरीतियों और भ्रम से उस पार जाकर सत्य की पहचान करें और सत्य के प्रकाश से अपने को प्रकाशित करें। तभी महावीर स्वामी का निर्वाण महोत्सव, गौतम गणधर का केवलज्ञान कल्याणक सार्थक होगा तथा हम सभी के द्वारा की जाने वाली पूजन, भक्ति, अभिषेक, शांतिधारा, अर्चना भी सफल होगी।

अंत:करण प्रकाशित करें :

यह पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम बाहरी प्रकाश के साथ-साथ अंत:करण प्रकाशित करें। अपने आचरण, व्यवहार, वात्सल्य, सहकार सौहार्द्र को परस्पर में बांटकर स्व-पर जीवन को भी मधुर बनाएं। प्रेम, करुणा, भाईचारे के दीपक जलाकर सभी में अपनत्व का संचार करें।

प्राणियों तथा पर्यावरण की रक्षा करें :

भगवान महावीर नें संयम आधारित जीवन शैली की बात की, व्यक्तिगत भोग और उपभोग के सीमाकरण की बात की, उन्होंने कहा पदार्थ सीमित है, वो असीम इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकते। आज इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हमें भगवान महावीर के उपदेशों पर चलते हुए भ्रष्टाचार मिटाने की कोशिश करनी चाहिए तथा सत्य व अहिंसा का मार्ग चुनकर दीपावली पर पटाखों, आतिशबाजी का त्याग करके जीव-जंतुओं, प्राणियों तथा पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। यदि हम यह कर सके तो सही मायनों में भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव मनाने की सार्थकता सिद्ध कर सकेंगे।

भगवान महावीर का मार्गदर्शन, उनके सिद्धान्त पर्यावरण की शुद्धि के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। कोरोना महामारी के समय में भगवान महावीर का जैन दर्शन एवं शिक्षाओं की ओर समूची दुनिया का ध्यान आकृष्ट हुआ है। भगवान महावीर की शिक्षाएं आर्थिक असमानता को कम करने की आवश्यकता के अनुरूप हैं।

पहले से अधिक प्रासंगिक महावीर के विचार :

भगवान महावीर के उपदेश आज पहले से अधिक अत्यंत समीचीन और प्रासंगिक हैं। भगवान महावीर की शिक्षाओं में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास, युद्ध और आतंकवाद के जरिए हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता तथा गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी सम-सामयिक समस्याओं के समाधान पाए जा सकते हैं। भगवान महावीर ने 'अहिंसा परमो धर्मः' का शंखनाद कर 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' की भावना को देश और दुनिया में जाग्रत किया। 'जियो और जीने दो' अर्थात् सह-अस्तित्व, अहिंसा एवं अनेकांत का नारा देने वाले महावीर स्वामी के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ हैं।

अनेक समस्याओं का समाधान :
आज विश्व के सामने उत्पन्न हो रहीं सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं,कोरोना महामारी, हिंसा का सर्वत्र होने वाला तांडव, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, वैमनस्य, युद्ध की स्थितियां, प्रकृति का शोषण आदि समस्याएं विकराल रूप ले रही हैं। ऐसी स्थिति में कोई समाधान हो सकता है तो वह महावीर स्वामी का अहिंसा, अपरिग्रह और समत्व का चिंतन है।

वीर निर्वाण संवत् सबसे प्राचीन :
वीर निर्वाण संवत् सबसे पुराना है। यह हिजरी, विक्रम, ईस्वी, शक आदि से अधिक पुराना है। वीर निर्वाण संवत्, विक्रम संवत्, शक संवत्, शालिवाहन संवत्, ईस्वी संवत्, गुप्त संवत्, हिजरी संवत् आदि से भी यह संवत् प्राचीन है। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दीपावली के दिन ही भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। उसके एक दिन बाद कार्तिक शुक्ल एकम से भारतवर्ष का सबसे प्राचीन संवत् 'वीर निर्वाण संवत्' प्रारंभ हुआ था। जैन "वीर निर्वाण संवत्" भारत का प्रमाणिक प्राचीन संवत् है और इसकी पुष्टि सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डॉ गौरीशंकर हीराचंद ओझा द्वारा वर्ष 1912 में अजमेर जिले में बडली गाँव (भिनय तहसील, राजस्थान) से प्राप्त ईसा से 443 वर्ष पूर्व के "84 वीर संवत्" लिखित एक प्राचीन प्राकृत युक्त ब्राह्मी शिलालेख से की गयी है। यह शिलालेख अजमेर के 'राजपूताना संग्रहालय' में संगृहीत है। प्राचीन व प्रमाणिक 2550वां जैन "वीर निर्वाण संवत्" 13 नवम्बर 2023 से शुरू होगा। जैन वीर निर्वाण संवत् भारत का प्रमाणिक संवत् है। जैन परंपरा में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव के अगले दिन से नए वर्ष का शुभारंभ माना जाता है।

यद्यपि युद्ध नहीं कियो, नाहिं रखे असि-तीर।
परम अहिंसक आचरण, तदपि बने महावीर ।।

अहिंसा के अवतार भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण- महामहोत्सव की आप सभी को अशेष शुभकामनाएं।
हम सभी को भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण महोत्सव मनाने के लिए जुट जाना चाहिए।

भगवान महावीर की दृष्टि में समभाव का महत्व

- डॉ. नरेंद्र जैन भारती सनावद (म.प्र.)

मनुष्य के रूप में किसी जीव का संसार में आना सुखद संयोग है क्योंकि मनुष्य को धर्म धारण करने का सुयोग मिल जाता है वह अपने नैसर्गिक ज्ञान का उपयोग कर बुद्धि को इच्छा अनुसार लक्ष्य की प्राप्ति में लगता है जिसे सच्चे सुख की प्राप्ति की इच्छा होती है वह जीव मात्र के सच्चे स्वरूप को समझ कर ऐसा पुरुषार्थ करना चाहता है ताकि दुखों से छुटकारा मिले, पाप का बंधन न हो तथा प्राणियों के प्रति सद्भावना बनी रहे। सद्भावना, समभाव से बनती है। अतः मनुष्य के जीवन में समभाव का विशेष महत्व है।

भगवान महावीर स्वामी के "दर्शन" में बताया गया है कि "संसार के जितने भी प्राणी दिखाई दे रहे हैं उनमें आत्मा एक समान है अतः किसी भी प्राणी को न मारो और ना सताओ।" यह उनका संदेश व्यक्ति को अहिंसात्मक जीवन पद्धति के अपनाने पर जोर देकर समान भाव रखने की प्रेरणा देता है। अतः कहा जा सकता है कि समभाव धारण करने के लिए "अहिंसा धर्म" का पालन करना जरूरी है। मन वचन और काय (शरीर) से शरीर किसी भी जीव के प्रति विकृत भाव ना बनें, वाणी में मधुरता हो तथा शरीर का उपयोग जीव हिंसा में ना हो, ऐसा जो विचार अनवरत रखता है वही सद्भाव है जो हमारी सम भावना को मजबूत बनाता है। सम्यग्दृष्टि के भाव समभाव से आपूरित होते हैं। सम्यक दृष्टि जीव व्यक्ति प्रशम,संवेग, अनुकंपा और आस्तिक्य गुणों से युक्त होता है ये गुण सद्भाव के प्रतीक हैं जिनके मन में सद्भाव होता है वही सबके साथ समानता का व्यवहार करता है यह समानता समभाव की प्रवृत्ति के कारण सार्थक होती है।सच्ची भक्ति और ध्यान के लिए संभव का होना जरूरी है।अतः जीवन में समभाव रखकर मानव जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

जैन धर्म की प्राचीनता एंव आज की आवश्यकता

कैलाशचंद्र जैन मारवाड़ा, कोटा

वैसे तो निर्विवाद रूप से जैन धर्म की प्राचीनता मान्य होनी चाहिए तथापि दुनिया के सभी धर्मों में सामान्यजन वैदिक धर्म (सनातन) को सबसे प्राचीन बताने का प्रयास करते हैं, क्योंकि जहां तक ईसाई, सिख, मुस्लिम एवं बौद्ध धर्म का प्रश्न है यह सब सबसे बाद के हैं।

बौद्ध धर्म भगवान महावीर के समकालीन है जो गौतम बुद्ध के जन्म के साथ है। मुस्लिम धर्म मोहम्मद साहब के द्वारा चलाया गया है। ईसाई धर्म ईसा मसीह के बाद उत्पन्न हुआ है और इसी प्रकार सिख धर्म गुरु नानक देव जी ने चलाया है।

अब रहता है प्रश्न वैदिक धर्म का तो यह भी जैन धर्म से पूर्व का नहीं है क्योंकि वेदों में स्थान-स्थान पर जैन धर्म एवं जैन तीर्थंकरों का वर्णन आया है। हिंदू धर्म के श्री राम हमारे बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के समकालीन है, तथा कृष्ण जी स्वामी, नेमिनाथ भगवान के यादव वंशी होकर काका बाबा में भाई लगते थे।

वेद जिन्हें अति प्राचीन मानते हैं उसमें भी हमारे निर्ग्रंथ मुनियों का वर्णन है

बताया है:-

॥ ओम नमो निर्ग्रंथों वृषभो ॥

यजुर्वेद में आया है कि निर्ग्रन्थश्री वृषभदेव को प्रणाम करता हूं, भागवत जी में बताया है कि सारे तीर्थों के दर्शन में जो पुण्य मिलता है वह श्री ऋषभदेव जी का नाम लेने व उनकी भक्ति से प्राप्त हो जाता है।

एक दृष्टान्त बहुत महत्वपूर्ण है वह बताता हूं जोकि ऋग्वेद में आया है

॥ ओम नग्नम्सुधीरं दिग्वासासम ब्रह्म गर्भम् सनातनम्, मुपैती वीरम पुरुषम् अरिहंतमादित्य वर्णम्तमसाः पुरुस्तात स्वाहा ॥

यानी मैं धीर-वीर-गंभीर सनातन, दिगंबर, ब्रह्मरूप, आदित्य वर्ण वाले नग्न परमात्मा की शरण जाता हूं।

इससे स्पष्ट है कि जैन धर्म एवं जैन मुनि अनादिकाल से चले आ रहे है; जिन्हें वेदों के रचयिता भी नमस्कार करते हैं। जैनागम के अनुसार जैन धर्म ही प्राचीन व अनादि धर्म था, एवं ऐसे कई चौबीसी तीर्थंकर हमेशा से होते आए हैं। प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान के दीक्षा लेने के समय अन्य राजाओं आदि के साथ मारीच, जो आदिनाथ जी का पोत्र था ने भी दीक्षा ली, किंतु पूर्णतः निर्वाह नहीं कर पाने से पथ-भ्रष्ट हो गया और अनेक धर्मों एवं पंथों की स्थापना की व उसके बाद से ही अन्य धर्मों की स्थापना प्रकट होती है।

हमारे प्राचीन मंदिर स्थान स्थान पर हैं, जिन्हें तोड़कर या जबरन कब्जा करके अजैनों ने अपना बना लिया जिनमें प्रमुख बद्रीनाथ वाले श्री आदिनाथ भगवान, तिरुपति बालाजी में श्री नेमिनाथ भगवान, डिग्गी के श्री चंद्रप्रभु भगवान व इसी प्रकार कई स्थानों पर हमारे जिन मंदिर उनके कब्जे में है।

दिल्ली की कुतुब मीनार में १४ जैन मंदिर तोड़कर मीनारें बनाई गई है जिसका उल्लेख पुरातत्व विभाग द्वारा लिखे गए पट्ट पर स्पष्ट है इससे स्पष्ट है कि जैन धर्म मूल और प्राचीन धर्म हैं और बाकी सब धर्म इसके बाद के हैं।

रहा प्रश्न आज की आवश्यकता पर तो जैन धर्म के सिद्धांत अहिंसा, अस्तेय, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह हैं। जो आज समाज में महती आवश्यकता रखते है।

काका कालेलकर ने कहा था कि "जहां पर दुनिया की अहिंसा समाप्त होती है वहां से जैन धर्म की अहिंसा शुरू होती हैं" सब ओर जहां हिंसा और बलात्कार आदि का बोलबाला है वहां जैन धर्म का अहिंसा व ब्रह्मचर्य का सिद्धांत पथ प्रदर्शन करता है। अपरिग्रह को यदि अपना लिया जाए तो सभी झगड़े विवाद समाप्त हो जावें, अनेकांतवाद व स्याद्वाद का सिद्धांत अति महत्वपूर्ण हो जाता है। आज मतभेद नहीं मनभेद भी काफी देखने में आते हैं अतः यदि जैन धर्म के सिद्धांतों को अपनाया जाए तो संपूर्ण संसार में एकता भाईचारा होकर शांति कायम हो जावे, व सभी देश प्रगति करें तथा सर्वत्र अमन एवं शांति हो जावेगी, इस प्रकार जैन धर्म की वर्तमान में अत्यधिक आवश्यकता है।

।।जैनम् जयतु शासनं।।

अंतर्मना गुरुदेव आचार्य श्री १०८ प्रसन्नसागर जी महाराज के २६/१०/२०२३ से "वसंतभद्र व्रत" प्रारम्भ हो गये है!" इस व्रत की मौनपूर्वक साधना ४० दिवसीय होंगी जिसमे मात्र ५ आहार व ३५ उपवास रहेंगे!

दीपावली पर विशेष--

भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव का महत्व

डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन, सनावद (म. प्र.)

जैन संस्कृति में ज्योति पर्व दीपावली का महत्वपूर्ण स्थान है। जैन धर्म की वर्तमान चौबीसी के अंतर्गत चौबीसवें तीर्थंकर, वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के अंतिम प्रहर में स्वाति नक्षत्र में समस्त कर्मों का नाश करके मोक्ष अर्थात् निर्वाण को प्राप्त किया था। अतः इस दिन जैन श्रद्धालु तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों को अपनाने के लिए संकल्प बद्ध होकर उनका निर्वाण महोत्सव ज्योति पर्व के रूप में कृत्रिम दीपकों को प्रज्ज्वलित कर मनाते हैं। उनकी स्मृति को जागृत रखने के लिए पार्थिव दीपों को जलाकर सोलहकारण भावनाओं के प्रतीक 16 दीपक जलाकर उनमें लगी बत्तियों को चौसठ ऋद्धियों का प्रतीक मानकर अज्ञान रूपी अंधकार का मेरे जीवन से पलायन हो, इस भावना के साथ दीप प्रज्ज्वलन करते हैं। जिस तरह दीप के प्रज्ज्वलित करने पर वह निस्वार्थ भाव से सभी को प्रकाश देता है। वह पुण्यात्मा, परमात्मा, अमीर'- गरीब,अच्छे - बुरे सभी पदार्थों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार भगवान महावीर स्वामी ने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य रूपी सर्वोदय के महान सिद्धांतों के माध्यम से सभी को लोक कल्याण कारक तथा सर्व हितोपदेशी उपदेश देकर अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर यह बताया था कि अंधकार घना हो सकता है परंतु यदि उसे मिटाने का संकल्प लिया जाए तो ऐसा संभव है। इसी तरह जो व्यक्ति अज्ञान रूपी अंधकार के कारण ज्ञान रूपी आत्म ज्योति प्रकट नहीं कर सके हैं वे चाहें तो अहिंसा, संयम और तप साधना कर अष्ट कर्मों का नाश कर निर्वाण को प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान महावीर स्वामी का धर्म पुरुषार्थवादी है। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक आत्मा द्रव्य दृष्टि से शुद्ध, बुद्ध, निरंजन, निराकार है परंतु पर्याय दृष्टि से अशुद्ध है, इसलिए वह 84 लाख योनियों में परिभ्रमण कर जन्म मरण के दुख उठा रही है। आपने बताया कि जन्म

तो प्रत्येक प्राणी का होता है परंतु निर्वाण सबका नहीं होता। जो व्यक्ति तप साधना के बल पर संपूर्ण कर्मों को नष्ट कर लेता है और जिसके शुद्ध स्वरूप प्रकट हो जाता है उसी को मोक्ष या निर्वाण होता है। भगवान महावीर के निर्वाण के संबंध में तिलोयपण्णत्ती में यतिवृषभाचार्य लिखते हैं -

कातिय किण्हे चोद्दसि पच्चूसे
सादिणामक्खते।
पावाए णयरिए एक्को वीरसरो
सिद्धा ।।

भगवान वीर प्रभु कार्तिक वदी चौदस के प्रत्यूष काल में स्वाति नामक नक्षत्र में पावापुरी से अकेले सिद्ध हुए। धवला टीका में कहा है -

पच्छा पावाणयरे कत्तियमासे य किण्ह चोद्दसिंम।
सादीए रत्तीए सेसरयं हत्तु णिव्वाओ।।

अर्थात् वीर प्रभु पावा नगर पहुँचे और यहां से कार्तिक वदी चौदस की रात्रि में स्वाति नक्षत्र में शेष अघातिया कर्मों को भी नाश करके निर्वाण को प्राप्त हुए।

हरिवंश पुराण में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण का वर्णन करते हुए लिखा है- भगवान महावीर भव्य जीवों को उपदेश देते हुए पावापुरी में पधारे और वहां के मनोहर उद्यान में चतुर्थ काल में तीन वर्ष साढे आठ माह बाकी रहे जाने पर कार्तिकी अमावस्या के प्रभात कालीन संध्या के समय योग का निरोध कर, कर्मों का नाश कर मुक्ति को प्राप्त हुए। देवताओं ने आकर उनकी पूजा की और दीप जलाये। उस समय उन दीपकों के प्रकाश से पावानगरी का आकाश प्रदीप्त हो रहा था। भक्त लोग जिनेश्वर की पूजा करने के लिए प्रतिवर्ष उनके निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में दीपावली मनाते हैं। इस दिन अनेक श्रद्धालु जन पावापुरी में एकत्रित होकर भगवान महावीर के

निर्वाण महोत्सव की पूजा कर उनके जीवन एवं सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा और आस्था व्यक्त करते हैं। भगवान महावीर स्वामी ने तीस वर्ष के बाद मगसिर कृष्ण दसवीं के दिन वन में जाकर बारह वर्ष तक कठोर तपस्या की। तत्पश्चात वह विहार करते हुए ऋजुकुला नदी के तट पर स्थित गांव के समीप पहुँचे और वैशाख शुक्ल दसमी के दिन दो दिन के उपवास का नियम लेकर सालवृक्ष के समीप एक शिला तट पर आतापन योग में आरुढ हुए। वहाँ शुक्ल ध्यान के धारण करने वाले वर्धमान जिनेंद्र ने घातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान प्राप्त किया, परंतु योग्य गणधर के अभाव में दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। छयासठ दिन के बाद इंद्र के प्रयास से जब इंद्रभूति गौतम समवशरण में पहुँचे। तब भगवान की दिव्य ध्वनि खिरने लगी। जिसे इंद्रभूति गौतम ने भी सुना। दिव्यध्वनि में भगवान के उपदेशों को सुनकर गौतम को सद्ज्ञान (सम्यक ज्ञान) की प्राप्ति हुई और उनके परिणाम इतने निर्मल हो गए कि जिस दिन भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण हुआ उसी दिन उनके प्रधान शिष्य गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। अतः इस दिन को व्यक्ति उनके केवलज्ञान दिवस पर उनकी पूजा करते है। तभी से जैन श्रद्धालुओं के लिए दीपावली निर्वाण और केवलज्ञान का प्रतीक बन गई। अतः इस दिन श्रद्धालु प्रातः काल भगवान महावीर स्वामी की पूजन कर निर्वाण महोत्सव मनाते है तथा शाम को केवल ज्ञान के प्रतीक के रूप में ज्ञान दीप प्रज्ज्वलित कर गौतम गणधर स्वामी के गुणों का स्मरण कर उनके महान उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

भगवान महावीर स्वामी ने सर्वज्ञता प्राप्त करने के उपरांत ही उपदेश दिया था। उनके उपदेशों में सर्व प्राणी समुदाय के कल्याण की भावना निहित थी। उनकी सभा में मनुष्य, पशु पक्षी आदि सभी तरह के प्राणी उपस्थित होकर धर्म लाभ लेते थे। उनके उपदेश अहिंसादि पाँच महाव्रतों पर आधारित थे। उन्होंने जीवन में अहिंसा और सत्य, वाणी में अनेकांतवाद और स्यादवाद, समाज में अपरिग्रहवाद के सिद्धांतों को अपनाकर "जीयो और जीने दो" की भावना के साथ प्राणियों को सद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी थी। अतः उनके तीर्थ को सर्वोदय तीर्थ कहा गया आचार्य समंतभद्र स्वामी युक्त्यनुशासन में कहते है-

सर्वान्तवत् तद्गुण मुख्य कल्पं,
सर्वान्तशून्यं च मिथोनपेक्षम्।सर्वापदामन्तकरं निरन्तं ,
सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।।

अर्थात् आपका (भगवान महावीर स्वामी) तीर्थ शासन सर्वांन्तवान है और मुख्य तथा गौड़ की कल्पना को साथ में लिए हुए है। जो शासन वाक्य धर्मों में पारस्परिक अपेक्षा का प्रतिपादन नहीं करता वह सर्व धर्मों में शून्य है। अतः आपका ही यह शासन तीर्थ सर्व दुखों का अंत करने वाला है और यही सभी प्राणियों के अभ्युदय का साधक सर्वोत्तम तीर्थ है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिसमें सभी के उदय, अभ्युदय और कल्याण की भावना निहित है वह सर्वोदय तीर्थ है। जिसमें भगवान महावीर स्वामी के सर्व जनोपयोगी उद्देश्यों के माध्यम से जीवों के उद्धार की यथार्थ प्रेरणा दी गई है। भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस दीपावली के दिन जैन श्रद्धालु मनाते है। निर्वाण का अर्थ आत्मा का भव बंधन से मुक्त होकर सच्चा सुख प्राप्त करना है अतः आत्मा के हित के लिए सभी को कार्य करना चाहिए। भगवती आराधना की यह गाथा हम सभी को प्रेरणा देती है-

णिव्वाणस्य यः सारो अब्बावाहं सुहं अणोवमियं।
कायव्वा हु तदटठं आदहिद गवेसिणा चेट्ठा।

अर्थात् निर्वाण का सार बाधा रहित, उपमा रहित सुख है। अतः आत्महित के खोजी को अव्याबाध सुख की प्राप्ति के लिए चेष्टा करना चाहिए। भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर आप सभी को मंगल कामनाएं !

तीर्थंकर भगवान् महावीर के २५५० वें निर्वाण महामहोत्सव के पावन प्रसंग पर विशेष –

आयरिय- अणेयंतजइणविरइयं

तित्थयर-महावीर-चरियं

(तीर्थंकर महावीर चरित)

प्रो. अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

णमो जिणाणं

पुप्फोतराभिहाणा तिसिलागब्भासाढसिदछट्ठम्मि।
अवइण्णमहावीरो तित्थयरो य जइणधम्मस्स ॥१॥

स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान से च्युत होकर आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी के दिन माता त्रिशला के गर्भ में जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान् महावीर अवतरित हुए।

तत्थ अट्ठदिवसाहिय णवमासपुण्णकरिदूण विदेहे ।
वेसालीकुण्डउरे णाहसिद्धत्थनंदवत्ते॥२॥

भगवं सुजम्मइसाएणवणवइपंचसयवस्सपुव्वम्मि ।
चेत्तसिदतेरसीए सुहे उत्तरफग्गुणिरिक्खे ॥३॥

गर्भ में नौमाह आठ दिन पूर्ण करके भारत वर्ष के विदेह देश के वैशाली कुंडनगर में नाथ वंशी राजा सिद्धार्थ के नान्द्यावर्त नामक महल में ईसा के पांच सौ निन्यानबे (५९९)वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रियोदशी के दिन शुभ उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में भगवान् महावीर का शुभ जन्म हुआ।

अट्ठोतरीयदोसयगयवस्साणिपासोप्पत्तीदो ।
महावीरस्स जम्मं होही खलु पुणधम्मठविउं ॥४॥

तेइसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ की उत्पत्ति से दो सौ अठहत्तर वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद धर्म की पुनः स्थापना के लिए तीर्थंकर महावीर का जन्म हुआ।

दट्ठूण सिंहचिण्हं वीरदाहिणपायंगुट्ठणहम्मि ।
होहिइ खलु तित्थयरो णायगवरमोक्खमग्गस्स ॥५॥

उस दिव्य बालक वीर के दाहिने पैर के अंगूठे के नाखून पर सिंह का चिन्ह देख कर (यह भविष्यवाणी कर दी गयी थी कि)निश्चित ही (यह बालक धर्म तीर्थ का कर्त्ता)तीर्थंकर और मोक्षमार्ग का श्रेष्ठ नेता होगा।

सिंहवीरचिण्हमत्थि,तत्तो च तित्थयरमहावीरस्स ।
वेसालिथम्भस्स खलु पडीयभारयसरयारस्स ॥६॥

तब से ही सिंह निश्चित ही तीर्थंकर महावीर का और वीरता का चिन्ह है तथा आज वैशाली का सिंह स्तम्भ भारत सरकार का प्रतीक है।

पढमे खलु गणतंते वेसालीए होही जस्स जम्मं ।
धम्मदंसणे ठवीअ वि गणतंतं य महावीरो ॥७॥

निश्चय ही विश्व के प्रथम गणतंत्र वैशाली में जिनका जन्म हुआ और उन भगवान् महावीर ने धर्म दर्शन के क्षेत्र में भी गणतंत्र की स्थापना की।

अप्पा सो परमप्पा णत्थि कोवि एगो इस्सवरो लोए ।
णत्थि कोवि कत्ता खलु ,लोअस्स य केवलं णाया ॥८॥

उन्होंने कहा कि प्रत्येक आत्मा परमात्मा है ,लोक में कोई एक ईश्वर नहीं है , निश्चित ही इस लोक का कोई भी कर्त्ता नहीं है और वह परमात्मा केवल ज्ञाता (दृष्टा) है।

जीवसयमेव कत्ता,सुहदुक्खाणं य सयं कम्माणं ।
सव्वकम्मनस्सिदूण, भत्तो वि य भगवन्तो हवइ ॥९॥

(उन्होंने समझाया कि) अपने सुख-दुखों का और अपने कर्मों का जीव स्वयमेव कर्त्ता है, अपने सभी कर्मों का नाश करके भक्त भी भगवान् हो जाता है।

रायविसयभोयत्तो विरत्तभावो य बालकालत्तो ।
मणुभवो भवणट्ठुं अत्थि सो सगपरकल्लणउं ॥१०॥

वे राज पाठ के सुख और विषय भोगों से बाल्यकाल से ही विरक्त भाव वाले थे (उसका कारण यह था कि) उन्होंने समझ लिया था कि यह मनुष्य भव संसार का अभाव करने के लिए तथा स्वपर कल्याण के लिए है ,(न कि इन्द्रिय विषय सुखों में रमने के लिए)।

विरत्तरायभवणेवि तीसवस्सेसु य कुमारकालम्मि।
वेरग्गवड्ढमाणं कायसत्तहत्थसुवण्णेवि॥११॥

वर्धमान कुमारा अवस्था के तीस वर्षों में राजभवन में भी विरक्त भाव से रहे और सात हाथ प्रमाण लम्बा सुन्दर सुवर्ण वर्ण युक्त शरीर होते हुए भी उनका वैराग्य ही वर्धमान होता रहा।

ण हि तं रज्जं करीअ सुमरेउं णियपच्छिमजम्माणं ।
उत्तरफग्गुणिरिक्खे गिण्हिअ दिक्खा य णाहवणे ॥१२॥

तवो य गिण्हिअ वीरो मग्गसिरकिण्हदसमीअवरण्हे ।
तिण्णि य उववासेहिं एक्को हवीअ दीअंबरो ॥१३॥

उन्होंने राज्य नहीं किया तथा पूर्व जन्म का स्मरण करके नाथ वन(वैशाली का समीपवर्ती उपवन) में मगसिर कृष्णा दसमी के दिन अपरान्ह काल में उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के रहते तीन उपवासों के साथ दीक्षा और तप ग्रहण करके अकेले ही दिगंबर हो गए।

वीरछदमत्थकाले करिउं मोणतवबारसवस्साणि ।
गओ जिम्हियसमीवे पडिमा य रिउउलणइतीरे ॥१४॥

वीर मुनि छद्मस्थ काल में बारह वर्षों तक मौन तप करके जिह्मिक ग्राम के समीप ऋजुकूला नदी के किनारे गए और प्रतिमा योग धारण कर लिया ।

वइसाहसुक्कदसमी हत्तरिक्खे सुहकालावरण्हे।
घाइकम्मणसिदूण य लहीअ वीरकेवलणाणं ॥१५॥

भगवान् महावीर ने समस्त घाति कर्मों का नाश करके वैसाख शुक्ला दसमी के दिन हस्त नक्षत्र के रहते शुभ अपरान्ह काल में केवलज्ञान प्राप्त किया।

जणीअ पसीअ सव्वं , ववहारणएण तिलोयतिक्कालं ।
सव्वण्णमहावीरो सुद्धेण य सुद्धाप्पाणं ॥१६॥

(केवलज्ञान के अनंतर)सर्वज्ञ भगवान् महावीर व्यवहार नय से तीनों लोकों और तीनों कालों के सभी द्रव्यों की सभी पर्यायों को जानते देखते थे और शुद्ध नय से अपनी शुद्धात्मा को जानते देखते थे।

छसट्ठिदिवाणंतरं,तए देसणा खिरीअ रायगिहम्मि ।
जए य गोयमगणहरो, आगच्छीअ समवसरणम्मि ॥१७॥

केवलज्ञान होने के छियासठ(६६)दिन के अनंतर भगवान् महावीर की देशना राजगृह के विपुलाचल पर्वत पर तब खिरी जब उनके प्रधान शिष्य गणधर गौतम समवशरण में आ गए।

तत्थ गिरिविउलाचले य सावणकिण्हपडिवदावरण्हे ।
खिरीअ पढमदेसणा, सव्वाणं पागदभासाए ॥१८॥

राजगृह के विपुलाचल पर्वत पर श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन अपरान्ह काल में सभी जीवों के कल्याण के लिए वीर प्रभु की प्रथम देशना दिव्य प्राकृत भाषा में खिरी।

वीरसासणदिअसो य तत्तो पसिद्धो णाणवीराणं ।
तीसवस्स पज्जंतं धम्मतित्थस्स य पवत्तणं ॥१९॥

तब से ही प्रथम देशना का यह दिन वीर शासन जयंती के रूप में प्रसिद्ध हुआ तथा तब से ही वीर प्रभु द्वारा प्रदत्त तत्त्वज्ञान प्रसिद्ध हुआ और उन्होंने तीस वर्ष तक धर्म तीर्थ का प्रवर्तन किया।

जआ अवचउकालस्ससेसतिणिवस्ससद्धअट्ठमासा ।
तआ होहि अंतिमा य महावीरस्स खलु देसणा ॥२०॥

जब अवसर्पिणीके चतुर्थकाल के तीन वर्ष साढ़े आठ मास शेष थे तब भगवान् महावीर की अंतिम देशना हुई थी।

कत्तियकिण्हतेरसे जोगणिरोहेण ते ठिदो झाणे ।
वीरो अत्थि य झाणे अओ पसिद्धझाणतेरसो ॥२१॥

योग निरोध करके कार्तिककृष्णा त्रयोदशी को वे (भगवान् महावीर)ध्यान में स्थित हो गए।और (आज) 'वीर प्रभु ध्यान में हैं' अतः यह दिन ध्यान तेरस के नाम से प्रसिद्ध है।

चउदसरत्तिसादीएपच्चूसकाले पावाणयरीए।
ते गमियपरिणिव्वुओदेविहिं अच्चीअ मावसे ॥२२॥

चतुर्दशी की रात्रि में स्वाति नक्षत्र रहते प्रत्यूष काल में वे (भगवान महावीर) परिनिर्वाण को प्राप्त हुए और अमावस्या को देवों के द्वारा पूजा हुई।

गोयमगणहरलद्धं अमावसरत्तिए य केवलणाणं ।
णाणलक्खीपूया य दीवोसवपव्वं जणवएण॥२३॥

इसी अमावस्या की रात्रि को गौतम गणधर ने केवल ज्ञान प्राप्त किया।लोगों ने केवल ज्ञान रुपी लक्ष्मी की पूजा की और दीपोत्सव पर्व मनाया।

कत्तिसुल्लपडिवदाए देविहिं गोयमस्स कया पूया ।
णूयणवरसारंभो वीरणिव्वाणसंवच्छरो ॥२४॥

अगले दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को देवों ने भगवान् गौतम की पूजा की और इसी दिन से वीर निर्वाण संवत और नए वर्ष का प्रारंभ हुआ।

णमो वीर जिणा

परमोपकारी इंद्राभूती गौतम गणधर स्वामी का केवलज्ञान दिवस

- डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

जैन धर्म में सच्चे देव,शास्त्र, गुरु को समान रूप से पूजनीय माना गया है। पावन पर्व दीपावली ने इस कथन को सार्थकता प्रदान की है। इस दिन कार्तिक कृष्ण अमावश्या की प्रभात वेला में भगवान महावीर स्वामी को मोक्ष की प्राप्ति हुई थी अतः प्रातः काल श्रद्धालुओं ने निर्वाण लाडू चढ़ा कर भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक मनाया तथा शाम को घरों में सोलह कारण भावना के प्रतीक सोलह दीपकों को प्रज्वलित कर, 64 बत्तीयों को जलाकर 64 ऋद्धियों का ज्ञान प्राप्त हो, ऐसी भावना भाते है।गौतम गणधर स्वामी का केवलज्ञान दिवस मनाकर हर्ष व्यक्त करते हुए उनके द्वारा किए गए अनंत उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

जैन धर्म के अनुसार केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद समवशरण में तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि खिरने लगती है, लेकिन भगवान महावीर स्वामी के साथ ऐसा नहीं हुआ। वैराग्य धारण कर बारह वर्ष की कठोर तपस्या के उपरांत 26 अप्रैल ई. पू. 557 वर्ष में भगवान महावीर स्वामी को ज्रम्भक नामक ग्राम में सालवृक्ष के नीचे केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी और वे सर्वज्ञ समदर्शी के रूप में प्रसिद्ध हुए। कर्मों का विजेता होने के कारण वे "जिन " कहलाये। केवलज्ञान की प्राप्ति होने के बाद भी 66 दिनों तक योग्य गणधर के अभाव में उनकी दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। इंद्र को चिंता हुई और वे उस समय के योग्य विद्वान परंतु अभिमानी इंद्रभूति गौतम के पास गये और शंका का समाधान चाहा, लेकिन इंद्रभूति गौतम शंका का समाधान करने में असफल रहे और भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में आए। उनके आगमन पर श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन भगवान महावीर स्वामी की दिव्यदेशना हुई। गौतम गणधर ने उनसे अनेक प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया। भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों को सुनकर गौतम गणधर के परिणाम इतने निर्मल हो गए कि दीपावली पर भगवान महावीर स्वामी को कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन मोक्ष की प्राप्ति हुई, उसी दिन शाम को गौतम गणधर स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । इंद्रभूति गौतम गणधर ने भी प्राणियों को धर्म का उपदेश देकर सन्मार्ग पर लगाया और भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों का प्रचार- प्रसार का महान उपकार किया। अतः हम सभी को कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन गौतम गणधर स्वामी का स्मरण कर सम्यकज्ञान की प्राप्ति की कामना करना चाहिए। केवलज्ञान दिवस भी दीपावली के रूप में ज्ञान दीप प्रज्ज्वलित कर मनाया जाता है। हम सभी को घर में प्रज्वलित दीपकों के माध्यम से ऋषि गौतम गणधर स्वामी का स्मरण कर सोलह कारण भावनाओं का सम्यकज्ञान प्राप्त हो, चौसठ ऋद्धियों को प्राप्त कर केवलज्ञान की प्राप्ति एवं मोक्ष का सुयोग बने, ऐसी कामना करना चाहिए। परम उपकारी गौतम गणधर स्वामी को केवलज्ञान प्राप्ति दिवस पर शत-शत नमन।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने डोगंरगढ़ पहुंचकर श्री चन्द्रगिरि क्षेत्र के किये दर्शन एवं आचार्य विद्यासागर से महाराज से आशीर्वाद ग्रहण किया

दिनांक ०५ नवम्बर, २०२३ दिन रविवार को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी छत्तीसगढ़ राज्य के डोगंरगढ़, श्री चन्द्रगिरि क्षेत्र पहुंचे जहाँ उन्होंने चन्द्रगिरि स्थित प्राचीन जिन मंदिरों के दर्शन किये तत्पश्चात वहां पर चातुर्मासरत विराजमान आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के चरणों में श्रीफल अर्पित करते हुए आचार्य श्री का आशीर्वाद ग्रहण किया। प्रधानमंत्री और आचार्य श्री के बीच देश हित और समाज हित में विस्तृत चर्चा हुई। वहीँ प्रधानमंत्री ने चुनाव प्रचार के दौरान आयोजित सभा में इस बात के उल्लेख किया कि आज मेरा दिन बहुत ही पवित्र वातवरण में प्रारम्भ हुआ है और जिन पर मेरी आपार श्रृद्धा है ऐसे देवतुल्य परमपूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के दर्शन से एक नई ऊर्जा के साथ यहाँ से जा रहा हूँ।

प्रधानमंत्री का स्वागत क्षेत्र कमेटी ने माला शाल आदि भेंट कर किया। आचार्य श्री के आशीर्वाद से डोगंरगढ़ में संचालित प्रतिभास्थली की दीदियों ने प्रतिभास्थली और चलचरखा के बारे में प्रधानमंत्री जी को अवगत कराते हुए विस्तृत जानकारी दी जिसकी प्रधानमंत्री मोदी सराहना की।

जन्म अमृत महोत्सव पर विशेष...

दार्शनिक मनीषी जैन आगम के शीतल अध्येता – डॉ.शीतलचंद जैन

हमने गणेशप्रसादजी वर्णी को नहीं देखा, हमने ऐसा अन्य कोई व्यक्तित्व भी नहीं देखा जो पाँच दशकों से अपने नाम को सार्थकता प्रदान कर रहा हो, अपनी कथनी–करनी के साम्य के साथ जीवन में चरणानुयोग की मान्यताओं अनुरूप चरित्र धारण कर द्रव्यानुयोग के लक्ष्य को हर पल अंगीकार कर रहा हो, चारों अनुयोगों का ज्ञान रखकर जीवन जीने वाले वरिष्ठ विद्वान डॉ. शीतलचंदजी जैन जयपुर को कौन नहीं जानता ।

वे बुंदेलखण्ड की ऊर्जावान मिट्टी में जन्में लेकिन राजस्थान की वीर भूमि उन्हें रास आ गई ऊर्जा और आगम की वीरवाणी को अपने जीवन का आधार बनाकर डॉ.शीतलचंदजी जैन ने अपने दूरदर्शी ज्ञान से इस बात को जान लिया था कि हमें समाज को विद्वान देना है, इसलिए उन्होंने एक ऐसा संस्थान खड़ा कर दिया जो आज अपनी प्रतिष्ठा के अनेक वर्ष पूर्ण कर चुका है । उनकी दूरदृष्टि से उनके सैकड़ों शिष्य उन्हें अपना आदर्श पुरुष मानते है, उनके द्वारा किए गए आगम के अध्ययन को वे बिना किसी मिलावट के ज्यों का त्यों अपने विद्यार्थियों को देते हैं जिससे वे सबके हृदय में विराजते है।

उनके आगम ज्ञान की शीतल छांव में जैन दर्शन के मोती बरसते है, जो उन्हें महान बनाते है। आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में ३५ वर्ष तक प्राचार्य रहते हुए राजस्थान संस्कृत विद्यालय में श्रमण विद्या संकाय, महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जैन दर्शन पीठ की स्थापना सहित ऐसे अनेक सराहनीय कार्य डॉ.शीतलचंद जी जैन ने किए जो जैन संस्कृति को जीवंत रखने के लिए अति आवश्यक है ।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली ने उन्हें शास्त्र चूड़ामणि विद्वान के रूप में मनोनीत किया। संस्कृत दिवस पर राजस्थान सरकार ने उन्हें सम्मानित कर पुरस्कार का गौरव बढ़ाया । जयपुर समाज ने अभिनव गणेश प्रसाद वर्णी की मानद उपाधि से अलंकृत किया । श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर की स्थापना से लेकर वर्तमान तक वे संस्थान से निकलने वाले विद्वानों के आदर्श है । उनका सम्मान हर व्यक्ति जिस अन्तरात्मा से करता है वैसा सम्मान हासिल करने में वर्षों की साधना लगती है। हम सबके आदर्श अभिनंदनीय व्यक्तित्व प्राचार्य डॉ.शीतलचंदजी जैन के जन्म अमृत महोत्सव २०२३ अनंत चतुर्दशी के मंगलमय अवसर पर दीर्घायु जीवन की मंगल कामना के साथ उन्हें लाखों प्रणाम ।

– राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

तारंगा जी सिद्ध क्षेत्र से प्रतिमा प्राप्त हुई जो २,००० साल पुरानी बताई जा रही हैं

शनिवार को बंधाजी में आचार्य विद्यासागर जी महाराज का अवतरण दिवस मनाया एवं 1500 पूर्णमासी कलश हुए स्थापित

बुंदेलखंड के प्राचीन अतिशय क्षेत्र बंधा जी में आचार्य भगवन विद्यासागर जी महामुनि राज के शिष्य मुनि श्री 108 विनम्र सागर जी महाराज अपने संघ 5 मुनिराज एवं क्षुल्लक जी के साथ विगत साड़े सात माह से विराजमान है। शनिवार को बंधा जी में प्रातः काल से ही भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। प्रात 8:00 बजे से श्रीजी का अभिषेक शांति धारा आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की पूजन संपन्न हुई।

बंधा जी में आचार्य भगवान विद्यासागर जी महाराज का 78 वा "अवतरण दिवस शरद पूर्णिमा के दिन मनाया गया। आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को शरद पूर्णिमा के दिन कर्नाटक राज्य के बेलगांव जिले के सदलगा ग्राम में हुआ था।

विद्यासागर जी को 30 जून 1968 में अजमेर में 22 वर्ष की आयु में आचार्य ज्ञानसागर ने मुनि दीक्षा दी। विद्यासागर को 22नवम्बर 1972 में ज्ञानसागर जी द्वारा आचार्य पद दिया गया था।

प्रदीप जैन बम्होरी ने बताया कि शनिवार को बंधा जी में करीब 1500 सर्व सिद्धि कलश स्थापित किए गए। प्रातः कालीन बेला में 9:00 बजे से प्रथम पाली की कलश स्थापन की क्रिया बाल ब्रह्मचारी दीपक भैया जी द्वारा संपन्न कराई गई। कलश स्थापना की द्वितीय पाली ढाई बजे से प्रारंभ हुई शाम को 5:00 बजे समापन हुआ।

बंधा जी में पूर्णमासी शांति कलश की स्थापना मुनि संघ के सानिध्य में विगत 8 माह से की जा रही है।

देश विदेश से हजारों लोग शांति कलश के माध्यम से बंधा जी क्षेत्र के मूलनायक महा अतिशयकारी चमत्कारी अजितनाथ भगवान से जुड़कर अपने जीवन को बदल रहे हैं।

मुनि श्री विनम्र सागर जी महाराज ने प्रवचन के माध्यम से कहा कि आज शरद पूर्णिमा की पावन तिथि पर आचार्य श्री का इस धरती पर अवतरण हुआ था आचार्य श्री ने इस भारत देश को अनेक उपकारों से उपकृत किया आचार्य श्री ने सैकड़ो गौशालाएं खुलवाकर लाखों पशुओं को जीवन जीने का अधिकार दिया।अनेक अस्पताल बनवाकर रोगी को निरोगी बनाने का कार्य किया। अनेक पाषाण के मंदिर बनवाकर जैन संस्कृति को हजारों वर्ष के लिए सुरक्षित एवं संरक्षित करने का कार्य किया है।

मुनि श्री विनम्र सागर जी महाराज ने कहा कि बंधा जी में विराजमान महा अतिशय कारी अजितनाथ भगवान का अतिशय आप लोग देख रहे है। 1100 वर्ष पहले अजितनाथ भगवान को सूर्य मंत्र देकर पाषाण से भगवान बनाया होगा। वास्तव में अजितनाथ भगवान का जो आभामंडल है,वह ग्रहस्थो के ग्रह नक्षत्रो को बदलने वाला है। कार्यक्रम में दिल्ली भोपाल, इंदौर, जबलपुर ,ग्वालियर ,झांसी टीकमगढ़ सहित अनेक नगरों से श्रद्धालु शामिल हुए।

रावण ने अहंकार को धारण कर एक गलती की जिसकी सजा वह आज तक भुगत रहा है - आचार्य सौरभ सागर

आचार्य सौरभ सागर महाराज ने बुधवार को धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि " इस सृष्टि में मानव को देवदर्शन अवश्य करने चाहिए, हमेशा प्रभु की भक्ति में तल्लीन रहना चाहिए क्योंकि न्यायालय में गुनाह करने के बाद माफी नहीं मिलती लेकिन जिनालय में गुनाह करने के बाद भी माफी मिल जाती है जिससे मानव प्रायश्चित कर अपना जीवन बिता सकता है। "

पूज्य गुरुदेव विजय दशमी के अवसर कहा कि " आज असत्य पर सत्य की जीत का दिन है, आज बुराई पर जीतने का दिन है। इंसान आज तक एक गलती के लिए इतने वर्षो से रावण को जलाते आ रहे है, किंतु रावण वह व्यक्ति था जिसने अहंकार में आकर सीता का अपहरण तो कर लिया किंतु उनके साथ कभी उनकी मर्जी जाने गलत आचरण नही किया क्योंकि एक जैन मुनि से उन्होंने संकल्प लिया था की वह किसी भी स्त्री को बिना उनकी मर्जी जाने कुछ भी नहीं करेगा। सीता के अपहरण के बाद रावण के भाव में आया तो था की उसने बहुत बड़ी गलती कर दी, किंतु अहंकार के भाव के कारण उसने दुनिया के सामने झुकना मंजूर ना कर लड़ना मंजूर किया। इसलिए आजतक सजा भुगत रहा है।

सरकार! प्लीज, रोप-वे बनाकर हमारा मोक्ष-वे खराब मत करो

– राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

भास्कर खास • झारखंड में तीन रोपवे बनाने की योजना पर काम शुरू, केंद्र सरकार उठाएगी खर्च

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन के लिए पहाड़ी के दुर्गम रास्तों की चढ़ाई नहीं करनी होगी, जल्दी ही बनेगा रोपवे

• बेंगलुरू की कंपनी कंसल्टेंट …र, तैयार करेगी डीपीआर

केके सुनील | धनबाद

मधुबन में जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करने के लिए श्रद्धालुओं को पारसनाथ पहाड़ी के दुर्गम रास्तों की चढ़ाई नहीं करनी पड़ेगी। जल्दी ही यहां रोपवे बनेगा। नेशनल हाइवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने रोपवे बनाने की योजना तैयार कर ली है। एनएचएआई के चीफ इंजीनियर वाहिद कमर फरीदी ने बताया कि मधुबन में रोपवे का निर्माण नेशनल हाइवे लॉजिस्टिक मैनेजमेंट लिमिटेड (एनएचएलएमएल) करेगी। इसके लिए कंसल्टेंसी बहाल हो गई है। बेंगलुरू की एक कंपनी रोपवे निर्माण के लिए फिजिबिलिटी रिपोर्ट और डीपीआर तैयार करेगी। इसके अलावा धनबाद के मैथन डैम और जमशेदपुर की डिमना झील पर भी रोपवे निर्माण की योजना है, क्योंकि यहां भी झारखंड के अलावा बिहार, छत्तीसगढ़ और ओडिशा सहित कई राज्यों से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। मैथन डैम को अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल का दर्जा प्राप्त है। वाहिद कमर ने बताया कि मैथन और डिमना झील में रोपवे निर्माण की योजना प्रारंभिक चरण में। इसके लिए डीवीसी और टाटा कंपनी से बातचीत चल रही है। जल्दी ही रांची में इस संबंध में बैठक होगी। पारसनाथ पहाड़ी पर बनने वाले रोपवे की लंबाई करीब छह किमी होगी। इसके निर्माण पर 50 से 60 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। ट्रॉली के मूवमेंट में कोई दिक्कत न आए, इसके लिए दो जगहों पर टावर का निर्माण किया गया। एक टावर के निर्माण पर करीब 60 लाख रुपए खर्च होंगे। वहीं दो जगहों पर स्टेशन बनाए जाएंगे, जहां करीब 300 गाड़ियों की पार्किंग की सुविधा हो। निमियाघाट में स्टेशन निर्माण के लिए मंदिर कमेटी ने स्वीकृति नहीं दी है। अब मधुबन में ही स्टेशन बनाने की योजना है।

मैथन डैम में बनेगा डेढ़ किमी लंबा रोपवे, 20 करोड़ खर्च

एनएचएआई के चीफ इंजीनियर वाहिद कमर फरीदी ने बताया कि तीनों रोपवे निर्माण पर होने वाला खर्च केंद्र सरकार वहन करेगी। इसके निर्माण की मॉनिटरिंग का काम एनएचएआई को सौंपा गया है। उन्होंने बताया कि मैथन डैम में छोटे स्तर पर रोपवे निर्माण की योजना है। यह रोपवे डैम के ऊपर से डीवीसी गेस्ट हाउस तक बनेगा, जिसकी लंबाई करीब डेढ़ किमी होगी। यहां दो जगह स्टेशन बनेंगे और पार्किंग की भी सुविधा होगी। इसके निर्माण पर करीब 20 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है।

विगत कुछ वर्षों से ऐसा लग रहा है कि जैन धर्म के तीर्थों पर अघोषित संकट सा आन पड़ा है, छोटा समाज, शांतिप्रिय, अहिंसक समाज होने के साथ देश की समृद्धि विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाला जैन समाज आज लगभग कहीं न कही आंदोलन की राह में खड़ा है । लोकतंत्र में सिर गिनने की परंपरा में हम पीछे है लेकिन न्यायपालिका के निर्णयों के बावजूद हमें न्याय नहीं दिया जा रहा है। न्यायपालिका में जीतने के बाद प्रशासन उन्हें क्रियान्वित करने में आना–कानी करता प्रतीत होता है । जैन समाज आखिर जाए तो कहां जाएं?

गिरनार की बात कैसे करें? गोम्मटगिरी की चर्चा जग जाहिर है। सम्मेदशिखरजी जो हमारा सबसे बड़ा और शाश्वत तीर्थ है, जिसे हम मोक्ष (निर्वाण) का हेतु मानते है । पहले वहां के लिए भी कई आंदोलन किऐ जैसे–जैसे शांति हुई अब फिर शिखरजी चर्चा में है । सरकार वहां अब रोपवे बनाने जा रही है। दैनिक भास्कर व अन्य अखबारों की खबरें है कि जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन के लिए पहाड़ी के दुर्गम रास्तों की चढ़ाई नहीं करनी होगी, जल्दी ही बनेगा रोपवे, केन्द्र सरकार उठाएगी खर्च। इस खबर के अनुसार बेंगलुरू की एक कम्पनी को डीपीआर बनाने को कहा गया है। इस हेतु पारसनाथ पहाड़ी पर छह किलोमीटर के रोप वे हेतु पचास से साठ करोड़ रुपए का खर्च अनुमानित है अब प्रश्न यह खड़ा हो रहा है कि सरकार जो यह रोप वे बना रही है यह किसके कहने पर एवं क्यों बना रही है। हमारी तो मान्यता है कि हम वहाँ नंगे पैर यात्रा करते है और उस भूमि का कण–कण पवित्र मानते हुए उसकी पूजा करते है। सरकार वहाँ रोप वे बनाकर जो कार्य हमारे लिए आसान करना चाहती है वह सुविधा हम चाहते ही नहीं है । फिर भी सरकार वहां रोप वे बनाकर एक पवित्र तीर्थस्थल को पर्यटन केन्द्र के रूप में बदलकर वहाँ से राजस्व प्राप्ति के उपाय क्यों करना चाहती है। बड़ी विडम्बना है कि जिस बात की मांग हम करते नहीं उसके लिए सरकारें अपनी पूरी ताकत लगाती नजर आती है । जो हमें नहीं चाहिए वह हमसे बिना पूछे दिया जा रहा है और जो हम मांगते है वह हमें मांगने से भी नहीं मिलता । आखिर ऐसा क्या कारण है, सरकार को विचार करना चाहिए कि जैन समाज अपनी जनसंख्या के अनुपात में सबसे अधिक राजस्व (टैक्स) प्रदान करने वाला, सर्वाधिक शिक्षा संस्थान संचालित करने वाला, सर्वाधिक गौशालाओ का संचालन करने वाला, मानव कल्याण प्राणी मात्र के कल्याण की भावना के अनुरुप संविधान में वर्णित मौलिक कर्तव्यों का पालन करने वाला एक राष्ट्र प्रेमी समाज है। साथ ही सर्वाधिक साक्षर व आत्म निर्भरता को प्रशय देने वाला व लाखों–करोड़ों लोगों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने वाला समाज है। जैन समाज के लोग कभी भी अपराधिक प्रवृत्तियों में संलग्न नहीं रहते है व देश के संविधान के साथ ही कार्य करने में विश्वास रखते है ।

सरकार से हमारी दूसरी बहुत सारी अन्य मांगें भी है लेकिन सरकार की रुचि हमारी मांगों में दिखाई नहीं देती है वह हमे सुविधा के नाम पर हमारे तीर्थ का प्राकृतिक सौंदर्य, उसकी पवित्रता, उसका मूल स्वरुप समाप्त करना चाहती है । जो किसी भी रूप में उचित नहीं है। सरकार यदि वहां विकास के लिए वास्तव में उत्साहित है तो उसे वहां रेलवे के स्टापेज बढ़ाने चाहिये, सड़कें, ड्रेनेज, आवागमन के संसाधन सुलभ कराने चाहिये।

पारसनाथ पहाड़ सदियों से हमारे बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि के साथ, अनंतानंत सिद्ध भगवानों की निर्वाण भूमि है। वह हमारे सांसारिक जीवन का साक्षात मोक्ष वे है जिस पर यात्रा करके जैन श्रावक–श्राविका यह मानता है कि –

''भाव सहित वन्दें जो कोई, ताहि नरक-पशुगति न होई''

जिसका आशय यह है कि सम्मेद शिखर की वंदना करके हम मोक्षपथ के पथिक हो सकते है और यह यात्रा जो २७ कि.मी. की है पारसनाथ पहाड़ पर पैदल, नंगे पैर चलकर ही की जाती है जो समस्त प्रकार की हिंसाओं से मुक्त होकर, भोजनादि प्रवृत्तियों को त्यागकर की जाती है ।

यदि वहां रोप वे, बन गया तो यह तय है कि वहां तीर्थ यात्रा नहीं पर्यटन को बढ़ावा देगा ।जिससे आने वाली पीढ़ीं पैदल यात्रा भूलकर यात्रा के वास्तविक आनंद व पुण्य प्राप्ति, मोक्ष की अभिलाषा है उसे भूल जाएगी।

सरकार, हम आपसे पूछना चाहते है कि जब जैन समाज नहीं चाहता है तो आप क्यों? हमारे तीर्थ को रोप वे दे रहे हैं । यदि आपको हमारी इतनी ही चिंता है तो रेलवे लाइन को मधुवन तक बढ़ा दें । वहाँ से गुजरने वाली प्रत्येक ट्रेन को स्टॉप दे। सड़क–बिजली–पानी–ड्रेनेज सिस्टम को ठीक कर पारसनाथ पहाड़ी चढ़ने के प्रारम्भ स्थल पर एक चेक पोस्ट बना दे जो वहाँ जाने से पहले खान–पान की वस्तुएँ अपवित्र अभक्ष्य वस्तुओं को ले जाने से रोकें । यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु पुलिस की पर्याप्त व्यवस्था करे ।हमारे यात्री रात्रि दो बजे से पहाड़ चढ़ना प्रारम्भ करते है उस मार्ग पर स्ट्रीट लाइट लगा दे । पहाड़ी पर चिकित्सा सुविया प्रदान करें। पूरे पहाड़ को पवित्र तीर्थ घोषित करें ।

सरकार! आप सरकार है, भारत में लोकतंत्र है। जैन समाज अल्पसंख्यक समाज होते हुए भी इस देश का सबसे शांतिप्रिय व देश के प्रति सबसे ज्यादा जुडाव रखने वाला समाज है, आप सरकार है तो इसका मतलब यह तो नहीं है कि आप हर जगह से केवल पर्यटन कर राजस्व प्राप्ति के उपाय खोजे ।सरकार हम बताना चाहते है कि हमें हमारे तीर्थ पर हमें गर्व है गौरव है कि वहां ९ वर्ष का बच्चा हो या ९० वर्ष का बुजुर्ग हर कोई पैदल ही यात्रा पसंद करता है । चाहे वह विदेश से आया हो या भारतीय हो वह वहां रुकता है उसे उस तीर्थ की शाश्वतता का ध्यान है ।

सरकार आप से निवेदन है कि जैन समाज आपकी सरकारों को टैक्स के रुप में राजस्व देता है ।जो उसकी जनसंख्या के हिसाब से कई गुना है । यदि आप वास्तव में कुछ करना चाहते है जैन समुदाय के लिए तो पहाड को छोड़कर आप खूब विकास करिये प्लीज–प्लीज–प्लीज सरकार आप हमारी विरासत को, हमारे प्राकृतिक सौन्दर्य को हमारी त्याग–तपस्या की परंपरा को बर्बाद मत करिये । हमें तीर्थों पर हमारे धर्म के अनुसार चलने दीजिए। हमारी मान्यता है कि संसार में जो भी कार्य हम करते है उनमें होने वाले पाप को धर्म क्षेत्र में नष्ट करते है ।धर्म क्षेत्र में किए गए पाप तो हमारे भविष्य के लिए वज्रलेप जैसे है। इसलिए सरकार आप हमारा मोक्ष वे अपना रोप–वे बनाकर खराब न करें ।इसी भावना के साथ..

म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने किये मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज के दर्शन

गिरनार जी की बात प्रधानमंत्री तक पहुँचाउंगा – शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव के बीच मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान सतना में विराजमान मुनि श्री प्रणम्य महाराज जी का आशीर्वाद लेने के लिए पहुंचे। जिसकी जानकारी मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया के जरिए भी दी । मुख्यमंत्री ने कहा मुझे परम पूज्य जैन मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ और उनके चरणों को पखारने का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जैन मंदिर पहुंचकर भगवान महावीर स्वामी के दर्शन किए।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि गिरनार जी की बात को मैं प्रधानमंत्री तक लेकर जाऊंगा और उद्दंडता करने वालों का बख्शा नहीं जायेगा । मंदिर कमेटी ने मुख्यमंत्री जी का सम्मान माला आदि पहना कर किया।

पुरुलिया में नदी से निकली नौवीं-दसवीं शती ईस्वी की पार्श्वनाथ जिन प्रतिमा

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इंदौर

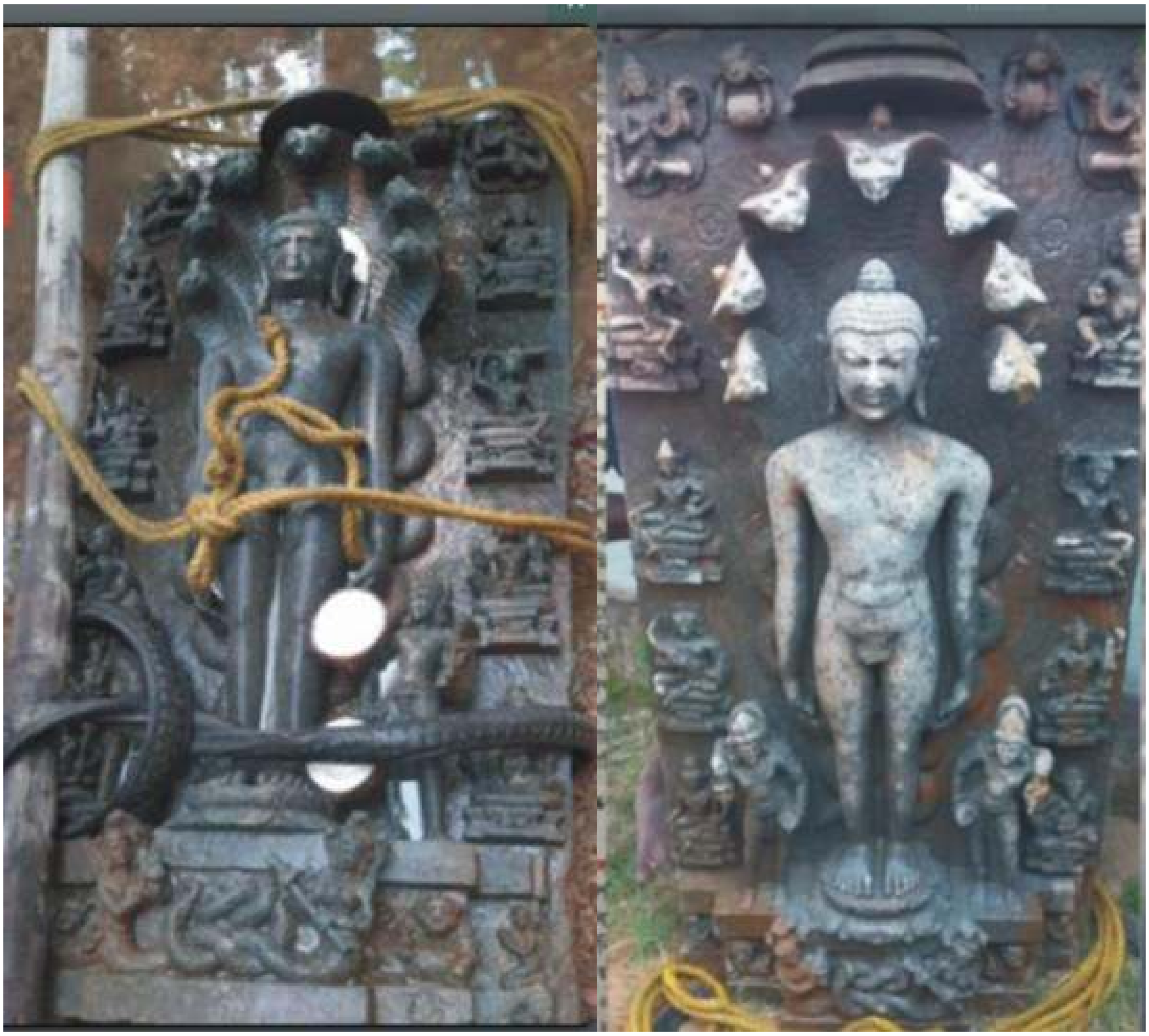

पश्चिम बंगाल के पुरुलिया में नौवीं-दसवीं शती ईस्वी की तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की बहुत सुन्दर, कलात्मक पाषाण प्रतिमा गोलामारा नदी से निकली है।

16 अक्टूबर 2023 को सुबह गोलामारा निवासी पशुपति मचाटो ने नदी में हाथ-मुंह धोते समय मूर्ति देखी। नदी के किनारे उसका धान का खेत है। वह खेत पर काम करने गया था। वह हाथ-मुंह धोने के लिए पानी में उतरा कि उसे यह प्रतिमा दिखी। उसने गांव जाकर लोगों को जानकारी दी। गांव के लोगों ने प्रतिमा को रस्सी व साइकिल के टायरों से बांधकर बाहर खींचा। फिलहाल यह प्रतिमा स्थानीय जैन मंदिर में स्थापित करवायी गई है। प्रतिमा सपरिकर व कलात्मक है। प्रतिमा की कलत्मकता दर्शनीय है। पादपीठ पर धरणेन्द्र पद्मावती को पैरों और उससे नीचे का भाग सर्पाकृति तथा ऊपर का भाग दैवाकृति में शिल्पित किया गया है। सर्प की कुण्डलियों से आपस में गांठ बाधे हुए दर्शाया गया है। बांयी ओर त्रिफणाच्छादित पद्मावती और दायीं ओर त्रिफणाच्छादित घरणेन्द्र को दर्शाया गया है। जो कि पार्श्वनाथ के यक्ष-यक्षी हैं। उसके उपरान्त सिंहासन के एक-एक विरुद्धाभिमुख सिंह, तदुपरान्त उसी पादपीठ में ही एक-एक भक्त गवासन में अंजलिबद्ध हैं। कायोत्सर्गस्थ जिन कमलासीन हैं। जिन के दोनों पार्श्वों में कलात्मकम चामरधारी हैं।

तदुपरान्त पार्श्वों में क्रम से एक के ऊपर एक (चार-चार) आठ विभिन्न आसनों में बैठी हुई दैव आकृतियां हैं। इन्हें दिक्पाल कहा जा रहा है। अभी इन्हें दिक्पाल कहना इसलिए ठीक नहीं होगा कि बाई ओर की सबसे नीचे की नारी आकृति प्रतीत होती है। इसलिए अभी इसके साक्षात् अध्ययन की गुंजाइश है।

जिन के पीछे से सर्प-कुण्डली दर्शाते हुए मस्तक पर सप्त फणावली बनी है। फणों का इतना अच्छा उत्कीर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। फणों के ऊपर छत्रत्रय बने हुए हैं।

वितान में दोनों ओर एक-एक माल्यधारी गगनचर उत्कीर्णित हैं, साथ ही एक-एक मृदंगवादक हैं। अधिकांश प्रतिमांकनों में छत्रत्रय के ऊपर एक मृदंगवादक दर्शाया जाता है, किन्तु इस प्रतिमा में दोनों ओर दो मृदंगवादक हैं। ऐतिह्य, मूर्तिकला और जैन इतिहास की दृष्टि से प्रतिमा बहुत महत्वपूर्ण है। पाकबिररा आदि आस-पास के स्थानों से प्राप्त जैन प्रतिमाओं से साम्य करने पर यह मूर्ति नौवीं-दसवीं शती ईस्वी की अनुमानित की गई है। सप्त-सर्प-फणावली और आसन पर धरणेन्द्र-पद्मावती की उपस्थिति से यह प्रतिमा तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति निर्विवाद है।

चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागरजी मुनिराज के आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष का शुभारंभ श्री सुरेश जैन (आईएएस) भोपाल व रमेश जैन सम्मानित

श्री दिगंबर जैसवाल जैन ट्रस्ट व युगल मुनि वर्षायोग समिति के तत्वावधान एवं आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज के संघ सान्निध्य में चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागरजी मुनिराज (दक्षिण) के आचार्य पदारोहण के शताब्दी वर्ष का शुभारंभ अध्यात्म साधना केंद्र छतरपुर में 29 अक्तूबर को आयोजित भव्य समारोह में मंगल ध्वनि व जयघोष के साथ हुआ। समारोह एक वर्ष तक चलेगा। सुनील जैन ने ध्वजारोहण व सुरेश-अरुण जैन द्वारा मंच उदघाटन के बाद आचार्य श्री वसुनंदीजी के 35 वें दीक्षा दिवस पर गुरू पूजन, पाद प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किए गए और उनके साथ मुनि श्री शिवानंदजी व प्रशमानंदजी को भी नवीन पिच्छी प्रदान की गई। मनोज जैन ने भगवान महावीर, रूपेश जैन ने आचार्य शांतिसागरजी व अशोक जैन ने आचार्य विद्यानंदजी के चित्रों का अनावरण किया।

इस अवसर पर समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री सुरेश जैन (आई ए एस) भोपाल को आचार्य श्री शांतिसागरजी राष्ट्रीय पुरस्कार तथा पत्रकारिता के माध्यम से जिनधर्म प्रभावना के लिए प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री रमेश जैन एडवोकेट, नई दिल्ली को आचार्य श्री पायसागरजी राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दोनो को समाज के श्रेष्ठिजनों ने प्रशस्तिपत्र, पगडी, अंगवस्त्र, शाल, तिलक, माल्यार्पण व पुष्पवर्षा के साथ " धर्मरत्न " और " पत्रकार रत्न " की उपाधि से अलंकृत किया। आचार्य श्री ने दोनों को आशीर्वाद के साथ साहित्य भेंट किया।

समारोह का कुशलता पूर्वक संचालन विदुषी राष्ट्र गौरव डा. इंदु जैन, नीरू जैन व संगीतकार पारस जैन ने किया। दाहोद महिला मंडल व बालिका परिषद शकरपुर ने प्रेरक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। आचार्य शांतिसागरजी की स्मृति में ताम्रपत्र पर षटखंडागम महाग्रंथ का विमोचन भी किया गया। समारोह में श्री क्षेत्र आरतीपुर के भट्टारक सिद्धांत कीर्ति, दीप चंद जैन, विश्व हिंदू परिषद के संरक्षक दिनेश चंद्र, पंडित मनोज शास्त्री, अनिल गुप्ता सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। भूपेंद्र जैन ने दीप प्रज्वलन, धनेंद्र जैन ने उपहार प्रदान किए। समारोह में पांच प्रदेशों के विशिष्ट अतिथियों रिखब चंद जैन-आगरा, वीरेंद्र जैन-बाडमेर, जिनेश जैन-अम्बाह, रूपेश जैन-मेघा ड्राइफ्रूटस व अभय जैन-अहमदाबाद का सम्मान कर समाज रत्न की उपाधि प्रदान की गई। मुनि श्री शिवानंदजी के गृहस्थ अवस्था के माता-पिता का सम्मान भी किया गया। दिनेश जैन ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर सौ दीपकों से महाआरती भी की गई।

एसाकुलथुर, तमिलनाडु के महावीर जैन मंदिर

महावीर जैन मंदिर तमिलनाडु के तिरुवन्नमलाई जिले के एसाकुलथुर गांव में स्थित है। एसाकुलथुर गांव वंदावसी से लगभग 22 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में, चेतपेट से 16 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में सोलायरुगावूर गांव के पास स्थित है। इसमें पुरानी ग्रेनाइट की मूर्तियाँ मिलीं। विशेष रूप से जिनालय श्री धर्मदेवी यक्षी के लिए महत्त्वपूर्ण है, इसलिए उपरोक्त मूर्ति की तीन पीढ़ी की नक्काशी यहां संरक्षित है।

जैन तीर्थ अयोध्या पहुँचें माननीय योगी जी, ज्ञानमती माता से लिया आशीर्वाद

आज भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि दि. जैन तीर्थ-अयोध्या में माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी, मुख्यमन्त्री-उ.प्र. का आगमन हुआ।

सर्वोच्च जैन साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन व आशीर्वाद के साथ ही उन्होंने तीर्थ पर विराजमान 31 फीट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव जी का दर्शन कर अर्घ्य समर्पण व आरती भी की।

उन्होंने इस अवसर पर जैन तीर्थ की मार्गदर्शिका प्रज्ञाश्रमणी श्री चन्दनामती माताजी व तीर्थ के पीठाधीश स्वस्तिश्री रवींद्रकीर्ति स्वामीजी से पाँच तीर्थंकर भगवानों की जन्मभूमि स्थलों के विकास पर भी चर्चा की।

उनके साथ अयोध्या के विधायक, महापौर व कमिश्नर, डीएम आदि समस्त उच्च अधिकारीगण भी उपस्थित हुए। तीर्थ कमेटी की ओर से महामंत्री अमरचंद जैन, मन्त्री विजय जैन, डॉ. जीवन प्रकाश जैन, सुभाषचंद जैन व प्रबंधक मनोज जैन आदि भी उपस्थित रहे।

कमेटी की ओर से मुख्यमन्त्रीजी को शाल, श्रीफल, माल्यार्पण, प्रतीक चिह्न भेंट आदि से सम्मानित भी किया गया और पूज्य माताजी ने उन्हें साहित्य भेंट किया।

शीतल तीर्थ के पचंकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की बैठक संपन्न

रतलाम में आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी की प्रेरणा से निर्मित दिगम्बर जैन शीतलतीर्थ के दिनांक २२ से २८ फरवरी तक आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और महामस्तकाभिषेक की तैयारियों के संबंध में महोत्सव समिति एक वृहद बैठक एम.जी. रोड़, इन्दौर स्थित प्रीतमलाल दुआ सभागृह में समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कमल ठोलिया (चेन्नई) की अध्यक्षता में ५ नवम्बर को सम्पन्न हुई।

बैठक को संबोधित करते हुए तीर्थ की अधिष्ठात्री सविता दीदी ने बताया कि शीतल तीर्थ निर्माण की परिकल्पना आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज की है और उन्हीं की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से उनके ही निर्देशन में तीर्थ का निर्माण वर्ष २००९ में प्रारम्भ हुआ था, लेकिन दुर्भाग्य से वर्ष २०१२ में आचार्य श्री समाधिस्थ हो गए। आपने कहा कि आचार्य श्री की भावना अनुसार ही शीतल तीर्थ संत सेवा, मानव सेवा, जीव दया को समर्पित रहेगा।

महोत्सव समिति के महामंत्री डॉ. अनुपम जैन ने कहा कि प्रतिष्ठा महोत्सव राष्ट्रीय स्तर का होगा एवं महोत्सव में इसमें अनेकों साधु संत एवं भट्टारक गणों को भी आमंत्रित किया गया है। महोत्सव के दौरान विद्वत् सम्मेलन, भट्टारक सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन एवं अ.भा.दि. जैन युवा परिषद का विशेष अधिवेशन भी होगा। महामस्तकाभिषेक कलश आबंटन समिति के अध्यक्ष श्री हंसमुख गांधी ने बताया कि दिनांक २६, २७ एवं २८ फरवरी को ५१ फीट ऊंचे कृत्रिम रूप से तैयार किए गए कैलाश पर्वत पर भगवान आदिनाथ की प्रतिष्ठेय प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक होगा जिसमें इन्दौर सहित देशभर के हजारों श्रद्धालु सम्मिलित होकर अभिषेक करेंगे।

अध्यक्ष श्री कमल ठोलिया ने अपने संक्षिप्त संबोधन में कहा कि प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण शीतल तीर्थ पर तीन चोबीसी जिनालय में ७२ जिनबिंबों को भी विराजमान किया जायेगा। आपने बताया कि तीर्थ पर गुरु मंदिर, गौशाला, यात्री निवास, संत सदन, औषधालय एवं एक सुदर्शनीय बाल उद्यान का निर्माण पूर्ण हो चुका है। महोत्सव में आने वाले यात्रियों के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था भी की जायेगी। बैठक को दिगम्बर जैन समाज सामाजिक संसद के अध्यक्ष श्री राजकुमार पाटोदी ने भी संबोधित किया। प्रारंभ में स्वागत भाषण श्री विमल झांझरी ने दिया एवं अतिथि स्वागत टी.के. वेद, अशोक खासगीवाला, कमल अग्रवाल ने किया। संचालन हंसमुख गांधी ने किया और आभार कीर्ति पांड्या ने माना। बैठक में श्री अशोक सेठी बेंगलुरु, अशोक गोधा, डॉ. जैनेन्द्र जैन, संजय अहिंसा, विमल अजमेरा एवं रतलाम, बड़नगर, सनावद, उज्जैन, भोपाल, भिंड आदि स्थानों में आए अनेकों समाज श्रेष्ठि उपस्थित थे।

कलिकाल में हमारे पास कोई ताकत नहीं है एक ही बल है - एकता - मुनिपुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज

सभ्यता को संस्कृति का रूप देने सभी को काम करना होगा-विजय धुर्रा

राष्ट्रीय महिला सम्मेलन के लिए आगरा तैयार है-मनोज जैन, आगरा

कलिकाल में हमारे पास कोई ताकत नहीं है समाज में एकता का ही बल है। कलिकाल में एकता ही शक्तिशाली होती है। आप सब एक हैं तो आपको कोई नहीं हरा सकता एक कार्य वह होता है जो अतीत बिगड़ा हुआ हो उसको भी सुधार देता है भविष्य अंधकार मय दिखता है उसको भी वर्तमान इतना सुदृढ कर देता है वर्तमान को सफलता प्राप्त करना चाहते हैं अतीत में कोई सफलता नहीं हैं।अतीत में वो ताकत है जो वर्तमान बिगाड़ देगा वर्तमान की जिंदगी से भविष्य की खाई को पाटने की शक्ति आप पा सकते हैं वर्तमान में आप अमीर बनना चाहते हैं वर्तमान में सब कुछ अच्छा करना चाहते हैं फिर भी नहीं कर पाते अतीत में वो ताकत है जो वर्तमान को भी बिगाड़ देता है मरता क्या नहीं करता काल शब्द अच्छा नहीं है ये खलनायक हैं मरते मरते भी वार कर देता है ऐसे ही ये काल तुम कितना ही अच्छा करना चाहो वो खलनायक का काम कर देता है हमारा अतीत जो मिटते मिटते कुछ ऐसा कर जाता है जिसकी सजा इस जीवन में व्यक्ति को भोगना पड़ती है इसलिए हमें आज जो वर्तमान है उसे सुधारना है वहीं तो कल हमारा अतीत हो जायेगा वर्तमान को अच्छा वनाने से आपका भविष्य भी उज्जवल बनता चला जायेगा उक्त आश्य केउद्वार हरि पर्वत आगरा में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

विशाल रोल कोल शोभा यात्रा होगी

इस दौरान धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मनोज बाकलीवाल ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से मुनिपुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में १७ अक्टूबर से महिला महासमिति का राष्ट्रीय अधिवेशन होने जा रहा है। तीन दिवसीय इस अधिवेशन में देशभर से नारी शक्ति आगरा पधार रही है। इस दौरान सांसकृतिक कार्यक्रम के साथ १८अक्टूबर को वेलनगंज से विशाल रोल कोल शोभा यात्रा निकाली जाएगी इसके बाद राष्ट्रीय परिदृश्य के संदर्भ में गहन मंथन होगा।

सभ्यता को संस्कृति में बदलने के लिए समाज काम करें

समारोह में मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव आपने प्रवचनों के दौरान सभ्यता को संस्कृति में बदलने का मंत्र दिया था जो सभ्यता है वहीं आदतों में बदल जाने पर संस्कृति बनकर संस्कार के रूप में विकसित होती चली जाती है आज शहरों में व्यस्त जीवन जी रहे लोगों में संस्कृति के प्रति उत्साह दिख रहा है वहीं छोटे नगरों में थोड़ी सी सम्पन्नता में व्यक्ति संस्कृति को भूल रहे हैं हम सब उनके लिए क्या करें समाज को इस दिशा में क्या करना चाहिए इस हेतु आपका मार्गदर्शन जरूरी है इस दौरान

कमेटी अध्यक्ष प्रदीप जैन पी एन सी सी महामंत्री नीरज जैन जिनवाणी मनोज बाकलीवाल राजेश जैन हुकम काका विजय धुर्रा ने नव निर्वाचित ललितपुर समाज अध्यक्ष अक्षय टडैया पूर्व अध्यक्ष अनिल अंचल शीलचंद जैन और पूरी टीम का सम्मान किया

धर्मात्मा वनों या ना वनों धर्मात्माओ के वीच फूट मत डालना

धर्म सभा के दौरान मुनि श्री ने कहा कि पक्का है कांटा नहीं लगेगा फिर भी देखकर चलना। आज प्रसंग आया है तो कह रहा हूं जिस घर में जिस परिवार में स्त्री का बोलबाला हो उसका नाश निश्चित है। गौतम बुद्ध के पास सब पहुंच गए स्त्रियों को अधिकार दो, बौध्द ने कहा कि यदि स्त्री बीच में आ गई तो हजार साल वाला पांच सौ साल में खत्म हो जाएगा स्त्रियों को घर की बागडौर मत सौंपना। तुम धर्मात्मा बनना या नहीं बनना लेकिन धर्मात्मा के बीच में फूट मत डालना। कुछ भी करो चाहे जीतो चाहें हारो समाज की एकता बनाये रखना कलिकाल में हमारे पास कोई ताकत नहीं है एक ही बल है एकता कल ही राजनैतिक चेतना मंच के सम्मेलन में कहा था कि पूरी समाज जिसे चाहती है उसे वोट देना जिसे हमारी समाज ने चुना है

आत्मा का हित कहा है ये देखना है

उन्होंने कहा कि-आत्मा का हित किसमें है वहीं कार्य करना है दुनिया में कुछ भी नहीं करना हर क्रिया करते समय ये सोचना है कि आत्मा का हित किसमें है इसकी साधना करते रहो तुम कभी पराजित नहीं होंगे। तुम्हारे लिए कोई विघ्न नहीं डाल सकता परिवार बंधु जाने दो बस एक ही बात देखना है कि इसमें आत्मा का हित है शेरनी ने खा लिया मुनि महाराज को उनमें मारने की शक्ति थी लेकिन एक ही बात विचार कि मैं आत्मा का अहित नहीं कर सकता आत्मा में अनन्त शक्ति है उन्ही को शक्ति प्राप्त होती है जिसे इसका ज्ञान होता है एक बार आत्मा की शक्ति जाग जाये तो भविष्य तो बिगडेगा ही नहीं ये आपके बस की बात नहीं है थोड़ी थोड़ी हम उसके निकट पहुंच कर उसी से जीते हैं।

राजस्थान के शेरगढ़ पहाड़ी पर जैन पुरावशेष

डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', इन्दौर

राजस्थान के बारां जिले के मांगरोल शेरगढ़ के किले से लगभग 30 किलोमीटर, प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्र चांदखेड़ी से 25 किलोमीटर और सामोद से 55 किलोमीटर की दूरी पर एक स्वतंत्र पहाड़ी पर पुराने जैन मन्दिर के भग्नावशेष हैं। यहां कई तीर्थंकर मूर्तियां व शिलालेख अब भी विद्यमान हैं। बारहमासी नाले के किनारे कालेशाह का मकबरा है। वहीं नाले के उस पार एक पहाड़ी पर एक विशाल गुफा है उसके अंदर व बगल की छोटी गुफा में चट्टान पर ही जैन मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। सामने छोटा सा मैदान, बरामदा है। यह दो मंजिला बना हुआ है। मूर्तियां ऊपर की मंजिल पर भी हैं।

पहुंच मार्ग पथरीला, झाड़ झंखाड़ से भरा है। रास्ता ठीक नहीं है। यहां से चारों ओर का सुंदर नजारा दर्शनीय है।

सप्तफणी तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रतिमा

एक गुफा मंदिर में चट्टान पर सात सर्पफणाटोपित तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन मूर्ति है। इस मूर्ति के नीचे की शिला का पर्याप्त क्षरण हो गया है, फिर भी इस प्रतिमा के अधो-शिला में दोनों ओर दो आकृतियाँ हैं, क्षरित हो जाने से अस्पष्ट हैं। पार्श्वनाथ प्रतिमा के पार्श्वों में संभवतः प्रतिहारी भी रहे हों जिनके बहुत मामूली निशानों की झलक प्रतीत होती है। यहां की प्रतिमाओं पर चूना आदि से कोई कुछ भी लिख देता है, कोई देख-रेख नहीं है।

तीर्थंकर पद्मप्रभ की प्रतिमा

मुख्य गुफा मंदिर में अनेक तीर्थंकर मूर्तियां हैं, इनमें से दो मूर्तियां

राजस्थान के शेरगढ़ पहाड़ी पर जैन गुफा मंदिर में

राजस्थान के शेरगढ़ पहाड़ी पर जैन गुफा मंदिर में सप्तफणाटोपित तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रतिमा

सुन्दर और स्पष्ट हैं। दोनों में एक बड़ी प्रतिमा के पादपीठ पर कमल टंकित है। हथेली और तलुओं में चक्र बना हुआ है। हृदयस्थल पर श्रीवत्स है। कुंचित केश और उष्णीष है। पद्मासन होने पर भी इनका दिगम्बरत्व दर्शाया गया है।

तीर्थंकर आदिनाथ प्रतिमा

लघु पद्मासन मूर्ति का शिल्पांकन कुछ अलग है। इसकी भुजाएं कुछ इस तरह तरासी गई हैं कि पैरों के तलवों का आधे से अधिक भाग हाथों से ढका हुआ है, इस कारण पैर के तलवों में चक्र अंकित नहीं हैं। हथेली पर चक्र दर्शाया गया है। श्रीवत्स है, इसका केश विन्यास भी अलग है। बाल पीछे को संवारे हुए से प्रतीत होते हैं। केश लटें स्कंधों तक अवलंबित हैं। कर्ण भी स्कंधों तक आये हुए हैं। इससे यह प्रतिमा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतीत होती है। इस मूर्ति के बायें तरफ एक खण्डित प्रतिमाओं का शिलाफलक भी रखा हुआ है।

शिलालेख-

यहाँ पर शिलालेख भी हैं। एक स्तंभ पर देवनागरी लिपि में शिलालेख है। इस अभिलेख के प्रारंभ में "संवत् 1792 शाके 1657" हमने चित्र पर से ही पढ़ा है। शेष अभिलेख भी सर्वेक्षण करके पढ़ा जा सकता है।

चाँदखेड़ी वाले बड़े बाबा

चाँदखेड़ी की प्रसिद्ध मूलनायक चमत्कारी आदिनाथ की प्रतिमा

राजस्थान के शेरगढ़ पहाड़ी पर जैन गुफा मंदिर में केश विन्यास युक्त तीर्थंकर आदिनाथ प्रतिमा

राजस्थान के शेरगढ़ पहाड़ी पर जैन गुफा मंदिर में तलवों, हथेलियों पर चक्रयुक्त तीर्थंकर पद्मप्रभ प्रतिमा

राजस्थान के शेरगढ़ पहाड़ी पर जैन गुफा मंदिर में संवत् 1792 शाक 1657 का स्तंभ लेख

—मनुज

इसी शेरगढ़ की बताई जाती है। इसकी बहुश्रुत घटना किंवदंती है। वह इस प्रकार है-

चाँदखेड़ी वाले बड़े बाबा की कहानी कहते हैं कोटा दरबार के दीवान किशन दास मणिया को एक दिन रात में स्वप्न दिखा। सपने में उन्हें प्रभु ने बताया कि सामोद से 55 किमी दूर शेरगढ़ की पहाड़ी पर भगवान आदिनाथ की मूर्ति है। उसे ले आओ और मंदिर बनवाओ। वे अगले दिन शेरगढ़ की पहाड़ी पर गए। वहां एक मूर्ति मिली लेकिन वो साढ़े 6 फीट लंबी और 2 टन भारी थी। वे उस मूर्ति को बैलगाड़ी पर लेकर नहीं जा सकते थे। तभी आकाशवाणी हुई 'आप बैलगाड़ी पर बैठो। मूर्ति अपने-आप लद जाएगी। पीछे मुड़कर मत देखना नहीं तो ये मूर्ति वहीं अचल हो जाएगी।' किशन दास बैलगाड़ी लेकर चले। चांदखेड़ी के पास वे बैलों को पानी पिलाने के लिए उतरे। उनका मन नहीं माना और वे पीछे मुड़कर देखने लगे। वह मूर्ति जमीन पर दिखी और अचल हो गई। किशन मणिया को वहीं मंदिर बनवाना पड़ा। चाँदखेड़ी मंदिर में यह मूर्ति ग्राउंड फ्लोर के नीचे अंडरग्राउंड वाले हिस्से में है।

माण्डवगढ़, ज़िला धार के जैन मंदिर

आज की भाववंदना में हम पर चलते हैं, एक ऐसे नगर, जहां एक समय 750 भव्य जैन मंदिर बने हुए थे, पर अब सिर्फ जीर्ण अवस्था मे 7 ही जिनमंदिर बचे हैं। जैन संस्कृति व 9 लाख की जैन आबादी का शहर रहा यह मध्यप्रदेश में स्थित हैं, आइए जानते हैं---

माण्डू या माण्डवगढ़, धार ज़िला जिले धार के माण्डव क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन शहर है। यह भारत के पश्चिमी मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित है। यह धार शहर से 35 किमी दूर स्थित है। यह 11 वीं शताब्दी में, माण्डू तारागंगा या तारंगा राज्य का उपभाग था।

जैन धर्म की आस्था का मुख्य केंद्र रहा यह नगर परमारों के काल मे प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ।

मांडू में ही भद्रबाहु द्वारा चौथी शताब्दी में ताड़ के पत्तों पर लिखी कल्पसूत्र की पांडुलिपियों को 15वीं शताब्दी में लघु चित्रण कला

के माध्यम से कागज ग्रंथ के रूप में तैयार किया गया था।

इसके पन्नो को लाजवर्त रत्न, स्वर्ण, चांदी आदि रत्नों से जड़ा गया था। इस आगम ग्रंथ में भगवान महावीर स्वामी सहित तीर्थंकरों के जीवन चरित्र का वर्णन है।

मांडू के आसपास खुदाई में तीर्थंकरों की कई जैन मूर्तियाँ, मुनि भद्रबाहु द्वारा ताड़ के पत्तों पर लिखित प्राचीन हस्तलेखों की पांडुलिपियां थीं।

इस प्राचीन ग्रंथ को मालवा सल्तनत की राजधानी मांडू में महमूद खिलजी के शासनकाल सन 1439 में वहां निवासरत जैन संतों ने फिर से एक सुंदर ग्रंथ के रूप में पुनर्लेखन कर एक पुस्तक के माध्यम से तैयार किया गया था। इसमें महावीर स्वामी के निर्वाण के संदर्भ को विस्तार से दर्शाया गया था।

इसके साथ ही इसमें जैन मुनि भगवान पार्श्वनाथ के भी जीवन चरित्र का इसमें उल्लेख है। वहीं डिपार्टमेंट ऑफ़ मेट्रोपोलिटन आर्ट न्यूयोर्क के रिसर्च मेंबर जॉन गाए के अनुसार चालुक्यों के साम्राज्य में गुजरात का पाटन जैन संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र था।

वैसा ही केंद्र मध्यकाल में मांडू जैन संस्कृति का केंद्र था। जहां धर्म की पांडुलिपियों को संग्रहीत कर उन्हे ग्रंथों में बदलने का काम तेजी से व्यापक पैमाने पर हुआ था।

जिनशासन के पवित्र ग्रंथ कल्पसूत्र के महत्व को देखते हुए

मांडू की चित्रमय झलकियाँ

उसकी मूल प्रति को नेशनल म्यूजियम दिल्ली में संरक्षित रखा गया है। प्रारंभ से ही जैन संस्कृति का गढ़ रहा है मांडू।

जैन धर्म के प्रादुर्भाव से मांडू जैन धर्म एवं संस्कृति का केंद्र रहा है। छठी शताब्दी में भी मांडू में जैनियों की बड़ी बस्ती थी। शोधकर्ता विनायक के अनुसार मध्य युग में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण निर्मित परिस्थितियों के कारण गुजरात और राजस्थान से बड़ी संख्या में जैन धर्मावलंबी मालवा में पहुंचे थे।

इतिहासकारों के अनुसार मांडू में कभी 750 जैन मंदिर थे। लगभग नौ लाख की आबादी में जैन समाज की संख्या सर्वाधिक थी। जैन संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले गधासाह का महल यहां स्थित है।

मांडू में खुदाई के दौरान जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां भी निकली है। जो जैन मंदिर और पुरातत्व विभाग के संग्रहालय मैं विराजित है। इतिहासकारों के अनुसार मांडू से लगे धार नगर में जैनियों का भक्तामर स्तोत्र लिखा गया था। पूर्व मांडू साम्राज्य में शामिल ग्राम कागदीपुरा में भी भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमाएं निकली है। जो एक बड़े तीर्थ क्षेत्र का आकार ले रहा है।

आज भी देश भर के जैन धर्मावलंबी तीर्थ दर्शन करने यहां पहुंच रहे है। आप भी अवश्य जाएं व यहां की जैन विरासत को जानें।

- जैन धर्म तीर्थ यात्रा से साभार

परम पूज्य संत शिरोमणि आचआर्य
श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज तथा
गणिनी आर्यिका श्री १०५ ज्ञानमति माताजी
के श्री चरणों में अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में
(शरद पूर्णिमा) शत् शत् वन्दन